सुसमाचार

अध्याय 2

मत्ती रचित सुसमाचार

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
पृष्ठभूमि 1
लेखक 2
परंपरागत दृष्टिकोण 2
व्यक्तिगत इतिहास 4
मूल श्रोता 6
स्वर्ग का राज्य 6
यहूदी रीति-रिवाज 8
अवसर 9
समय 9
स्थान 9
उद्देश्य 10
संरचना तथा विषय-वस्तु 12
परिचय : मसीहा राजा 12
वंशावली 12
यीशु के जन्म का विवरण 14
राज्य का सुसमाचार 15
मसीहा आ गया था 15
पहाड़ी उपदेश 17
राज्य का विस्तार 18
यीशु के आश्चर्यकर्म तथा प्रतिक्रियाएं 18
राजा के राजदूत 20
चिह्न और दृष्टांत 21
चिह्न और प्रतिक्रियाएं 21
राज्य के दृष्टांत 22
विश्वास और महानता 23
यीशु पर विश्वास करने से इनकार 23
परमेश्वर के राज्य में महानता 25
वर्तमान विरोध तथा भविष्य में विजय 26
प्रचंड विरोध 26
भावी विजय 27
यीशु की सेवा की समाप्ति 29

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संघर्ष 29
शिष्यता 30
विजय 30
मुख्य विषय 31
पुराने नियम की धरोहर 31
उद्धृण और संकेत 32
स्वर्ग का राज्य 33
मसीहा राजा 34
अविश्वासी यहूदी अगुवे 34
दीनता और नम्रता 36
परमेश्वर के लोग 36
कलीसिया 37
परमेश्वर का परिवार 38
बुलाहट 40
उपसंहार 42

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सुसमाचार

अध्याय दो

मत्ती रचित सुसमाचार

परिचय

बेल्जियम के राजा अल्बर्ट, सन् 1919 में रेलगाड़ी से अमेरीका की यात्रा कर रहे थे। वे रेलगाड़ी चलाने में सक्षम थे, अतः उन्होंने चालक का वस्त्र धारण कर लगभग दस मील तक रेलगाड़ी चलाई। रेलगाड़ी के अगले पड़ाव पर उत्साहित भीड़ ने राजा अल्बर्ट को ढूँढा परंतु उन्हें नहीं पाया। वे राजा को विशिष्ट परिधान तथा विशेष प्रकार के व्यवहार में देखना चाहते थे। वे इस बात से अज्ञात थे कि वह लंबा चौड़ा व्यक्ति जो ढीला-ढाला कमीज और रेलगाड़ी चलाने वालों की टोपी पहने था, वही वास्तव में बेल्जियम का राजा था।

एक दृष्टिकोण से, मत्ती रचित सुसमाचार भी यही कहानी दोहराता है। यह एक राजा की कहानी है, अर्थात् यहूदियों के राजा यीशु की। परंतु उस समय के बहुत से लोगों ने उसे नहीं पहचाना क्योंकि वह वैसा नहीं दिखता था जैसे लोगों की अपेक्षा थी और उसका व्यवहार भी वैसा नहीं था जैसा वे सोचते थे। वह भिन्न प्रकार का राजा था।

यह हमारी श्रृंखला सुसमाचारों का दूसरा अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "मत्ती रचित सुसमाचार" रखा है क्योंकि हम अपना ध्यान पहले सुसमाचार अर्थात् मत्ती के पुस्तक पर केन्द्रित करेंगे।

अपने अध्ययन के लिए हम मत्ती के सुसमाचार को तीन भागों में विभाजित करेंगे। सर्वप्रथम हम मत्ती की पुस्तक की पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे। तब हम इसकी संरचना तथा विषय-वस्तु का अध्ययन करेंगे। अंत में हम मत्ती के सुसमाचार के कुछ मुख्य विषयों को देखेंगे। आइये, हम मत्ती रचित सुसमाचार की पृष्ठभूमि के अध्ययन के साथ आरंभ करें।

पृष्ठभूमि

> बहुत से लोग पूछते हैं, "मुझे बाइबल की संदर्भ-संबंधित बातों को जानने की क्या आवश्यकता है? क्या मैं बाइबल के एक अच्छे अंग्रेजी अनुवाद को पढ़कर इसके अर्थ को नहीं समझ सकता?" मेरा कहना है कि बिना संदर्भ का कोई भी लेखन संदर्भहीन लेखन होता है और इसका कुछ भी अर्थ लगाया जा सकता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि सभी प्राचीन लेखन एक विशेष प्रकार के ऐतिहासिक, साहित्यिक, भाषासंबंधी, पुरातत्वीय और धार्मिक संदर्भ में लिखे गए हैं तथा वे हमारे संदर्भ से बिल्कुल भिन्न हैं। एक व्यक्ति ने एक बार इस प्रकार कहा, "भूतकाल विदेश की तरह है। विदेशी लोग भिन्न तरीके से कार्य करते हैं।" भूतकाल वर्तमान से भिन्न है और पुरावशेष, अर्थात् हमारी आधुनिक कल्पनाओं के साथ भूतकाल को समझना, के विरुद्ध सबसे बड़ी कठिनाई बाइबल का सावधानीपूर्ण संदर्भित अध्ययन है।
>
> डॉ. बेन विदरिंगटन

बाइबल की पुस्तकों का ठीक-ठीक अर्थ जानने के लिए उनकी पृष्ठभूमि जैसे लेखक कौन है, और लेखन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है, समझना आवश्यक है

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> क्योंकि जब लेखकों ने उसे लिखा तो उन्होंने मान लिया था कि उसके पाठक उसी संस्कृति के हिस्सा हैं जिस संदर्भ में वह लेख लिखा गया है और उन्होंने इस बात को इस प्रकार मान लिया कि उसके पाठक उस लेख के विस्तृत संदर्भ को समझ लेंगे। और इसलिए, कई घटनाओं में यह पता लगाना अवश्यक हो जाता है कि लेखक कौन है और उसकी संस्कृति कौनसी है ताकि उसकी विस्तृत संस्कृति तथा इतिहास से सच्चाई का अनुमान लगाकर अधिक रोशनी डाली जा सके।
>
> डॉ. जेम्स हैमिल्टन

हम मत्ती के सुसमाचार की पृष्ठभूमि का तीन चरणों में अध्ययन करेंगे। पहला, मत्ती को लेखक के रुप में देखेंगे। दूसरा, मत्ती के मूल पाठकों के बारे में बातचीत करेंगे। और तीसरा, हम उस अवसर या परिस्थितियों का अध्ययन करेंगे जिसमें मत्ती ने यह सुसमाचार लिखा था। आइये, सबसे पहले हम इस सुसमाचार के लेखक के प्रश्न के बारे में अध्ययन करें।

लेखक

जब भी हम किसी पुस्तक या पत्री या किसी अन्य लेखन का अध्ययन करते हैं तो इसके लेखक के बारे में जानना अति सहायक होता है। क्योंकि जितना अधिक हम लेखक और उसके संदर्भ के बारे में जानेंगे हम उतना ही अधिक उसके दृष्टिकोण तथा उसके लेखन के बारे में समझेंगे। और बाइबल अध्ययन में भी यही बात पाई जाती है। जितना अधिक हम बाइबल के लेखकों के बारे में जानेंगे उतना ही अधिक हम उन बातों को सीख सकेंगे जो वे हमें सिखाते हैं। अतः जब हम मत्ती रचित सुसमाचार को देखते हैं तो सबसे पहला प्रश्न जो हम पूछना चाहते हैं वह यह है, "इस पुस्तक को किसने लिखा है?"

हम मत्ती रचित सुसमाचार के लेखक का दो चरणों में अध्ययन करेंगे। पहला, हम इस पारंपरिक विचारधारा की पुष्टि करेंगे की इस पुस्तक को प्रेरित मत्ती ने लिखा था जो यीशु के आरंभिक बारह चेलों में से एक था। दूसरा, हम मत्ती के व्यक्तिगत इतिहास को देखेंगे। आइये, हम परंपरागत विचारधारा से आरंभ करें कि मत्ती ने इसे लिखा है।

परंपरागत दृष्टिकोण

> मैं सोचता हूँ कि हम इस बात के प्रति काफी आश्वस्त हो सकते हैं की मत्ती, अर्थात् प्रेरित मत्ती वास्तव में मत्ती रचित सुसमाचार का लेखक है, यद्यपि कुछ विद्वान इस पर संदेह व्यक्त करते हैं। एक बात हम जानते हैं कि प्राचीन कलीसियाई पैतृक बहुत संदेहवादी थे – बल्कि इस पर अपनी राय कम ही व्यक्त करते थे – कि धोखाधड़ी से किए गए कार्य को धर्मवैधानिक कार्य, परमेश्वर के प्रेरणा स्त्रोत से लिखे गए वचन के रूप में मान्यता देने से बिल्कुल इनकार करते थे। दूसरी बात यह है की मत्ती का मत्ती रचित सुसमाचार के लेखक होने के विषय में कोई दूसरी परंपरा भी नहीं है। केवल एक ही आधिकारिक परंपरा यह है कि मत्ती ही ने इस पुस्तक को लिखा है। तीसरी बात, यदि आरम्भिक कलीसिया, किसी अन्य व्यक्ति का नाम, ऐतिहासिक तथ्यों को छोड़कर किसी अन्य कारणों से, केवल नाम के लिए, या किसी प्रेरित को इस पुस्तक से जोड़ते, तो उन्होंने मत्ती के नाम का चुनाव करके बड़ा ही गलत निर्णय लिया। इसका कारण यह है की मत्ती एक चुंगी लेनेवाला था। उसके व्यवसाय से यहूदी अत्यंत घृणा करते थे। और मत्ती का सुसमाचार ऐसा सुसमाचार है जो यहूदियों को यह बताने के लिए लिखा गया था कि यीशु ही मसीह है। तो ऐसी स्थिति में क्या वे मत्ती को इस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> सुसमाचार का लेखक मानते? इसका कोई अर्थ दिखाई नहीं देता। यदि फिर भी वे मत्ती का नाम इस सुसमाचार से जोड़ते हैं तो इसका अर्थ है कि उनके पास कोई न कोई ठोस प्रमाण तो होगा ही जो यह प्रमाणित करे कि मत्ती ही ने इस सुसमाचार को लिखा था।
>
> डॉ. स्टीव कोवन

परंपरागत दृष्टिकोण कि मत्ती ही ने पहले सुसमाचार को लिखा है यह कलीसिया की आरम्भिक सदियों से आता है। शीर्षक के साथ पाए जाने वाले इस सुसमाचार के सभी हस्तलेखों में मत्ती और केवल मत्ती को लेखक के रूप में दिखाया गया है। हमारे पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि यह सुसमाचार कभी भी मत्ती के नाम के बिना कलीसिया में प्रसारित किया गया हो।

सबसे पहले हियरापोलिस के पापियास ने इस पुस्तक के लेखक का श्रेय मत्ती को दिया था। पापियास का जीवनकाल पहली सदी के अंत से लेकर दूसरी सदी तक था। वह कलीसिया के आरम्भिक समयों के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है जिनके विषय में हमारे पास जानकारी उपलब्ध है।

कलीसिया के इतिहासकार कैसरिया के यूसेबियस, जिसने 325 ईस्वी में लेखन कार्य किया, ने अपनी पुस्तक ऐकलेसिआस्टिकल हिस्ट्री, पुस्तक 3, 39, खण्ड 16, में मत्ती रचित सुसमाचार के लेखक के विषय में पापियास की गवाही को दर्शाया :

> मत्ती ने तार्किक बातों को वचन को एक व्यवस्थित क्रम में रखा।

यहाँ हम देखते हैं कि पापियास ने दूसरी सदी के आरम्भ में इस सुसमाचार का लेखक मत्ती को दर्शाया। यह भी ध्यान देने योग्य बात है की यूसेबियस ने इसलिए पापियास को उद्धृत किया क्योंकि वह स्वयं इस बात को दर्शाना चाहता था कि मत्ती ने इस पुस्तक को लिखा था।

कलीसिया के एक अन्य पैतृक लियोन्स के आयरेनियस ने भी, जिसने 180 ईस्वी के दौरान लेखन कार्य किया, मत्ती को ही इस सुसमाचार के लेखक के रूप में दर्शाया। सुनिए उसने अगेंस्ट हेरेसिस पुस्तक संख्या 3, 1 खण्ड 1 में क्या लिखा :

> जब पतरस और पौलुस रोम में सुसमाचार प्रचार कर रहे थे और कलीसिया की स्थापना की नींव रख रहे थे तो मत्ती ने भी इब्रानियों के मध्य उन्हीं के बोली में एक लिखित सुसमाचार प्रसारित किया।

कुछ समय पश्चात्, टरटूलियन का जीवनकाल 155 से 230 ईस्वी के बीच था। उसने भी अपनी पुस्तक अगेंस्ट मारशियन पुस्तक 4, अध्याय 2 में मत्ती के लेखक होने की पुष्टि की :

> प्रेरितों में यूहन्ना और मत्ती ने हमारे अंदर विश्वास जगाया . . . लूका और मरकुस ने बाद में इसका नवीनीकरण किया।

जहाँ तक आयरेनियस और टरटूलियन का सवाल है, उनके अनुसार मत्ती ने यह सुसमाचार लिखा। उनकी इसी बात को आरंभिक कलीसिया द्वारा भी स्वीकार किया गया। मत्ती द्वारा पहले सुसमाचार को लिखे जाने को निश्चयता के साथ स्वीकार किया गया।

इस बात को महसूस करना भी महत्वपूर्ण है कि मत्ती के लेखक होने के आरंभिक दावे मत्ती के ज्यादा प्रभावशाली न होने कारण भी मजबूती प्राप्त करते हैं। यदि कलीसिया या कोई और अपनी पसंद के किसी चेले के साथ उस सुसमाचार का नाम जोड़कर उसे विश्वसनीयता प्रदान करना चाहता था, तो उन्होंने शायद किसी अन्य अधिक प्रभावशाली चेले को चुना होता। परंतु मत्ती का उल्लेख सुसमाचारों में बहुत ही

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कम पाया जाता है। अतः ऐसा होना संभव नहीं है कि सुसमाचार के साथ उसका नाम गलत रूप से जोड़ दिया गया हो।

> सबसे पहले, हमें पहली सदी के प्रत्यक्ष गवाहों के महत्व को समझना है। प्रत्यक्ष गवाहों की गवाही को बड़ा ही महत्व दिया जाता था और इन गवाहों की गवाही को हल्के में नहीं लिया जाता था। यह होने वाली घटनाओं की बातों को पवित्र रूप में बताये जाने के समान था। हम यह भी जानते हैं कि दूसरी सदी के आरंभ में पापियास ने लिखा था कि मत्ती रचित सुसमाचार को प्रेरित मत्ती ने ही लिखा था। और पापियास ने अपने जीवनकाल में निश्चय ही प्रेरितों को व्यक्तिगत रूप से जाना होगा। इस सुसमाचार के मत्ती द्वारा लिखे जाने के प्रति आश्वस्त होने का एक अंतिम कारण मैं यह कहना चाहता हूँ कि यद्यपि मत्ती का नाम मत्ती रचित सुसमाचार के लेख में नहीं पाया जाता, फिर भी सच्चाई यह है कि आरंभ से ही इसके लेखक और अधिकार के रूप में मत्ती का सुसमाचार बिना उसके नाम के प्रसारित नहीं किया गया होगा।
>
> रेव्ह. माइकल ग्लोडो

निसंदेह, आधुनिक समालोचक विद्वानों ने इस बात पर संदेह व्यक्त किया है कि प्रेरित मत्ती ने इस सुसमाचार को लिखा था, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने बाइबल के लेखकों के बारे में अन्य अनेक परंपरागत दृष्टिकोणों परम्पराओं पर संदेह व्यक्त किया है। परंतु मत्ती के इस सुसमाचार के लेखक होने के बारे में संपूर्ण प्राचीन प्रमाण, और इसके विरुद्ध किसी चुनौती के न होने से हम इस बात पर पूरी तरह से विश्वास कर सकते हैं कि उसी ने इस पुस्तक को लिखा है।

हमने यहाँ पर इस परंपरागत दृष्टिकोण को देख लिया है कि मत्ती ने ही इस पहले सुसमाचार को लिखा है, इसलिए अब हमें मत्ती के व्यक्तिगत इतिहास का अध्ययन करना चाहिए।

व्यक्तिगत इतिहास

पवित्रशास्त्र हमें मत्ती के व्यक्तिगत इतिहास के बारे के कुछ महत्वपूर्ण बातों को बताता है। उदाहरण के तौर पर यह हमें बताता है कि वह एक यहूदी एवं चुंगी लेनेवाला था। हम इन दोनों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे, और इस बात से आरंभ करेंगे कि मत्ती एक यहूदी था।

मत्ती की यहूदी वंशावली कई प्रकार से प्रकट की गई है। एक बात तो यह है कि वह यीशु के बारह चेलों में से एक था और सभी चेले यहूदी थे। दूसरी बात यह है कि मत्ती के यहूदी नाम थे। मत्ती भी एक यहूदी है, जिसे इब्रानी पुराने नियम से लिया गया था। उसका दूसरा नाम लेवी, जो हम मरकुस 2:14 और लूका 5:28 में पाते हैं, इस्राएल के बारह गोत्रों में से एक गोत्र का नाम था। अतः यह दोनों नाम हमें यह बताते है कि मत्ती एक यहूदी था। मत्ती की यहूदी वंशावली को प्राचीन मसीही लेखों द्वारा इस बात से भी प्रमाणित किया जा सकता है कि उसने इब्रानी भाषा में लिखा था।

मत्ती के सुसमाचार को समझने के लिए मत्ती की यहूदी परंपरा एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि है, क्योंकि यह हमें विशिष्ट यहूदी महत्व को समझने के लिए सहायता करती है। इस सुसमाचार के यहूदी चरित्र का विस्तृत अध्ययन हम इस अध्याय में बाद में करेंगे। अतः केवल स्पष्टीकरण के लिए हम एक ही उदाहरण का उल्लेख करेंगे।

मत्ती 15:24 में मत्ती ने लिखा है कि यीशु ने निम्न दावा किया :

> इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया। (मत्ती 15:24)

दूसरे सुसमाचारों से बढ़कर, मत्ती ने इस बात पर जोर दिया कि यीशु केवल इस्राएल के लिए आया था।

मत्ती की यहूदी परंपरा के अतिरिक्त, उसके जीवन का एक और ध्यान देने योग्य वर्णन यह है कि वह एक चुंगी लेनेवाला था।

पहला सदी में, फिलिस्तीन के अनेक यहूदी रोमी साम्राज्य के लिए चुंगी लिया करते थे। इन में से कुछ चुंगी लेनेवाले एक स्थान से दूसरे स्थानों पर ले जाए जाने वाले समान पर चुंगी लिया करते थे। वे निजी व्यवसायी थे जो चुंगी लेने के लिए शासकों को यह अधिकार देने के लिए धन दिया करते थे। वे लोगों से तय रकम से अधिक धन वसूलते थे जिससे वे अपना मुनाफा कमाते थे। फलस्वरूप, ये चुंगी लेनेवाले लोगों के दृष्टि में लूटपाट मचानेवाले और चोर ठहरते थे – और इस प्रवृति को उचित ठहराया जाता है।

इस कारण, यहूदी चुंगी लेनेवाले अपने देशवासियों के दृष्टि में दोहरे दोषी ठहरते थे। पहला, वे घृणित कब्जा जमानेवाली रोमी ताकतों के प्रतिनिधि थे। और दूसरा, अपने ही लोगों को अपनी नीच कमाई के लिए लूटते थे। वे इतने घृणित समझे जाते थे कि पुराने रब्बियों के लेख के अनुसार उन्हें यहूदी न्यायालय में गवाही देने की भी अनुमति नहीं थी। इससे बढ़कर, चुंगी लेनेवालों से झूठ बोलने की अनुमति थी और इसकी न्यायसंगत विद्रोह के रूप में प्रशंसा की जाती थी।

सुनिए मत्ती 9:9-10 में मत्ती ने यीशु द्वारा स्वयं को बुलाये जाने का वर्णन कैसे किया :

> **यीशु ने मत्ती नाम एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। वह उठकर उसके पीछे हो लिया। और जब वह घर में भोजन करने के लिये बैठा तो बहुतेरे महसूल लेनेवाले और पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ खाने बैठे। (मत्ती 9:9-10)**

अपने बारे में वर्णन करने में मत्ती बड़ा ही सच्चा था और उसने खुलेआम स्वीकार किया कि यीशु के दिनों में चुंगी लेनेवाले "पापियों" के श्रेणी में रखे जाते थे। ऐसा करके, मत्ती ने अपने आपको, यीशु को और अपने लिखित सुसमाचार को यहूदी अगुवों के विरोध में रख दिया।

उदाहण के लिए, देखें कि यीशु ने मत्ती 21:31-32 में कैसे यहूदी अगुवों की अलोचना की :

> **यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया, और तुम ने उस की प्रतीति न की : पर महसूल लेनेवालों और वेश्याओं ने उस की प्रतीति की: और तुम यह देखकर पीछे भी न पछताए कि उस की प्रतीति कर लेते। (मत्ती 21:31-32)**

अपने पापमय व्यक्तिगत इतिहास के बारे में खुलेआम बोलने की मत्ती की इच्छा उसके सुसमाचार के एक अन्य महत्व से भी जुड़ा हो सकती है, जिसका अध्ययन हम इस अध्याय में बाद में करेंगे। दूसरे सुसमाचार लेखकों से बढ़कर, मत्ती ने इस बात पर अधिक जोर दिया कि यीशु एक विनम्र राजा था जिसने अपने अनुयायियों को विनम्र होने की शिक्षा दी। अपने अतीत को ध्यान में रखते हुए, मत्ती ने अनुग्रह की अपनी आवश्यकता को खुलेआम पहचाना और उस राजा का अनुसरण करने की अपनी इच्छा की घोषणा की जिसने उसे बुलाया और परिवर्तित किया था। यीशु ने उसे हेरोदेस के पापमय सेवक से बदलकर स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का विनम्र सेवक बना दिया।

> **हमारे जीवन में, नम्रता ऐसी दिखनी चाहिए जैसे कि हम प्रसन्न हैं, जब दूसरों के और अपने जीवन में अच्छी बातें हो रही हों तो हम संतुष्ट हों, परंतु जब दूसरे लोगों की प्रगति हो रही हो, जब दूसरे लोग सम्मान प्राप्त कर रहे हों या उनके कार्य**

> फलदायी हो रहे हों, तो हम उसमें आनन्दित हों। हम उसके लिए परमेश्वर के प्रति आभारी हों और हम सबसे पहले परमेश्वर को सारा आदर और धन्यवाद दें। सबसे बढ़कर हम परमेश्वर के लिए जिएँ न कि अपने लिए। इसलिए नम्रता ऐसी होनी चाहिए कि मेरी अपनी इच्छा ही पूरी न हो बल्कि परमेश्वर की इच्छा को ही पहला स्थान मिले, चाहे वह किसी दूसरे के जीवन से मिले या फिर हमारे अपने जीवन से।
>
> डॉ. जॉन मेक्किनले

हम इस परंपरागत दृष्टिकोण को देख चुके हैं कि मत्ती ने इस सुसमाचार को लिखा था, और उसके व्यक्तिगत् इतिहास से भी अवगत हुए हैं, इसलिए अब हम उसके मूल श्रोताओं के बारे में अध्ययन करेंगे जिनके लिए उसने यह सुसमाचार लिखा था।

मूल श्रोता

मत्ती ने अपने मूल श्रोताओं को विशेष रीति से नहीं दिखाया। लेकिन उसने उनके बारे में कुछ प्रमाण अवश्य दिए। जैसा कि हम देखेंगे, ऐसा प्रतीत होता है कि मत्ती ने यहूदी मसीहियों के लिए यह सुसमाचार लिखा है।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में संकेत दिया था कि सारे सुसमाचार किन्ही विशेष श्रोताओं के लिए लिखे गए थे। परंतु मत्ती के सुसमाचार में पाए जानेवाले कुछ महत्व दर्शाते हैं कि यह सुसमाचार यहूदी मसीहियों के लिए प्रयुक्त थे। उदाहरण के तौर पर, मत्ती ने किसी अन्य सुसमाचार लेखक से अधिक पुराने नियम को उद्धृत किया है। उसने बार-बार इस बात को दोहराया है कि किस प्रकार यीशु ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा किया है। और उसने विशेषकर इस बात पर बल दिया कि यीशु ही वह मसीहा राजा था जिसकी प्रतीक्षा यहूदी सदियों से कर रहे थे। यहूदी विषयों पर उसका महत्व अविश्वासी यहूदी अगुवों के साथ यीशु के टकरावों में भी प्रकट होता है, जिसका वर्णन मत्ती अन्य सुसमाचार लेखकों से अधिक करता है। इसके साथ ही मत्ती ने यीशु के पुराने नियम की व्यवस्था से सम्बन्ध पर भी सबसे अधिक बल दिया, विशेषकर इसके प्रभु के रूप में।

बाद में, इसी अध्याय में, हम इन संबंधों के बारे में विस्तृत अध्ययन करेंगे। इसलिए, इस समय हम केवल दो उदाहरणों का जिक्र करेंगे जो यह बताते हैं कि मत्ती ने इस सुसमाचार को यहूदी श्रोताओं के लिए लिखा था। हम "स्वर्ग का राज्य" मत्ती के द्वारा प्रयोग किए गए वाक्यांश से प्रारंभ करेंगे।

स्वर्ग का राज्य

पिछले अध्याय में हमने यह देखा था कि सभी चार सुसमाचार परमेश्वर के राज्य के शीर्षक से जुड़े हुए हैं। परंतु मत्ती ने "परमेश्वर का राज्य" जैसे वाक्यांश का प्रयोग बहुत कम ही किया है। इसके बदले उसने "स्वर्ग का राज्य" जैसे वाक्यांश का प्रयोग किया है। मत्ती रचित सुसमाचार ही बाइबल में अकेली पुस्तक है जो इस वाक्यांश का प्रयोग करती है। और जैसा कि हमने देखा है कि दोनों वाक्यांशों का एक ही अर्थ है।

परमेश्वर के प्रति श्रद्धा भाव के कारण, यहूदी लोग परमेश्वर के नाम- या इसके समकक्ष किसी नाम- का प्रयोग करने से बचते थे ताकि वे ऐसे ही परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेने से बचें। इससे बचने के लिए उन्होंने "परमेश्वर" के नाम के स्थान पर "स्वर्ग" शब्द का प्रयोग किया। मत्ती ने भी इसी बात को ध्यान में रखते हुए "स्वर्ग का राज्य" जैसे वाक्यांश का प्रयोग किया। जब हम समदर्शी सुसमाचारों में समानान्तर अनुच्छेदों की तुलना करते हैं तो पाते हैं कि जहाँ अन्य सुसमाचार लेखकों ने "परमेश्वर का राज्य" का प्रयोग किया है वहीँ मत्ती ने "स्वर्ग का राज्य" वाक्यांश का प्रयोग किया है।

> मत्ती ने लगभग अपने पूरे सुसमाचार में "स्वर्ग का राज्य" वाक्यांश का प्रयोग किया है जो हम दूसरे सुसमाचारों में "परमेश्वर का राज्य" वाक्यांश के रूप में पाते हैं। मैं सोचता हूँ कि कई ऐसे स्थान भी है जहाँ मत्ती ने "परमेश्वर का राज्य" जैसे वाक्यांश का प्रयोग किया है, परंतु क्योंकि मत्ती एक यहूदी लेखक है, मसीह का एक यहूदी विश्वासी है, और एक यहूदी के लिए परमेश्वर का नाम अति पवित्र होने के कारण उसका उच्चारण उचित नहीं समझा जाता है। इसलिए परमेश्वर को सम्बोधित करने के लिए "स्वर्ग" जैसे समतुल्य शब्द का प्रयोग किया गया है। हम दूसरे सुसमाचारों में पढ़ते हैं, "मैंने स्वर्ग और पृथ्वी के विरूद्ध पाप किया है।" इसका तात्पर्य है, "मैंने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया है।" और खतरा यह है कि जब हम "स्वर्ग का राज्य" जैसे वाक्यांश सुनते हैं तो सोचते हैं, "अरे, यह कैसा हल्का और कमजोर वाक्यांश है . . .स्वर्ग का राज्य – उसे देख नहीं सकता।" परंतु सच्चाई तो यह है कि वह तो परमेश्वर के राज्य के विषय ही बात कर रहा था, इस विचार के साथ कि परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा इस संसार का राजा बनने जा रहा है। इसलिए कभी-कभी मसीही लोग भूलवश "स्वर्ग का राज्य" को गलत समझ लेते हैं। वास्तविकता तो यह है कि यीशु कहता है – परमेश्वर ही राजा है और वह मेरे द्वारा ही राजा बनने जा रहा है।
>
> डॉ. पीटर वाकर

मरकुस 4:30-31 में मरकुस के राई के दाने के दृष्टान्त का वर्णन सुनिए :

> [यीशु] ने कहा, हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें? वह राई के दाने के समान है; कि जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। (मरकुस 4:30-31)

यहाँ मरकुस ने इस वाक्यांश का सीधा प्रयोग किया है : परमेश्वर का राज्य। परंतु मत्ती 13:31 में मत्ती के प्रारूप को देखिए :

> उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया; कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। (मत्ती 13:31)

जब मत्ती ने इस दृष्टान्त को लिखा तो उसने "स्वर्ग का राज्य" वाक्यांश का प्रयोग किया जबकि मरकुस ने इसके लिए "परमेश्वर का राज्य" प्रयोग किया।

> जब आप मत्ती के स्वर्ग के राज्य की तुलना अन्य सुसमाचारों से करते हैं जहाँ मरकुस और लूका भी उसी वाक्यांश को परमेश्वर का राज्य कहते हैं, तो वह इस बात को सुनिश्चित करता है कि वे सभी एक ही संदर्भ एवं एक ही बात को संबोधित कर रहे हैं। जब आप मत्ती के सुसमाचार को पढ़ते हैं तो स्वर्ग के परमेश्वर और पृथ्वी के मनुष्य में अंतर पाते हैं। परमेश्वर के तरीके से कार्य करने को वह स्वर्ग का राज्य कहता है और मनुष्य के तरीके से शासन करने, अधिकार करने और कार्य करने और एक-दूसरे के प्रति व्यवहार करने को हम पृथ्वी के राज्य के रूप में संबोधित कर सकते हैं। और मत्ती के लिए स्वर्ग के राज्य के बारे में बात करना बहुत ही प्रभावशाली बात है। इस प्रकार उसके लिए पृथ्वी पर की चीजें और परमेश्वर जो हमारा पिता है जो राज्य एवं शासन करता है और जिसने यह प्रतिज्ञा की है कि वह शीघ्र आने वाला है, के बीच अंतर उत्पन्न करता है।

> इसलिए मत्ती की भाषा में स्वर्ग का राज्य हमें इस बात का अनुभव कराता है कि परमेश्वर का राज्य जो अभी आने वाला है और इस पृथ्वी का राज्य एवं शासन और इसका व्यवहार, दोनों सच्चाईयों में बहुत अंतर है और मत्ती का "स्वर्ग का राज्य" वाक्यांश का प्रयोग आने वाले परमेश्वर के राज्य का हमें अनुभव कराता है, स्वाद चखाता है और आशा जगाता है।
>
> डॉ. जोनाथन पेन्निंगटन

अधिकांश विद्वान मानते हैं कि मत्ती उन बातों को ठीक वैसे ही लिखता है जैसे कि यीशु ने यहूदियों से कहीं थीं, जबकि मरकुस एवं अन्य नये नियम के लेखकों ने "परमेश्वर का राज्य" शब्दांश का प्रयोग यीशु के अर्थ को और अधिक लोगों को समझाने के लिए किया है। चाहे यह तर्क ठीक हो या न हो, मत्ती का "स्वर्ग का राज्य" का प्रयोग इस बात का प्रमाण है कि उसके मूल श्रोता यहूदी ही थे।

यहूदी रीति-रिवाज

मत्ती के सुसमाचार में यहूदी श्रोताओं की ओर संकेत करने वाला अन्य पहलू यह है कि मत्ती ने पहले से यह मान लिया था कि उसके श्रोताओं को यहूदी रीति-रिवाज़ का काफी ज्ञान था। एक उदाहरण के रूप में, मत्ती 15:1-2 में, मत्ती ने इस घटना का वर्णन किया :

> तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे। तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं? (मत्ती 15:1-2)

मरकुस ने इसी कहानी को अपने सुसमाचार के 7:1-5 में लिखा है। परंतु मरकुस ने यहूदी रीति-रिवाज़ों का विश्लेषण करने के लिए तीन और वचन जोड़े हैं जिससे कि उसके रोमी श्रोता इन रीति-रिवाज़ों को ठीक-ठीक समझ सकें। मत्ती को इस प्रकार का विश्लेषण देने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

अब, जब यह माना जाता है कि मत्ती ने अपने यहूदी श्रोताओं के लिए यह सुसमाचार लिखा है, तो उसके सुसमाचार का एक हिस्सा है, जो संदर्भ से बाहर है। उदाहरण के लिए मत्ती ने यीशु को अरामी भाषा में बोलते हुए उद्धृत किया और फिर अपने श्रोताओं के लिए उनकी भाषा में उसका अनुवाद किया।

उदाहरण के लिए मत्ती 27:46 के शब्दों को सुनिए :

> यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? (मत्ती 27:46)

इस बात के कई स्पष्टीकरण हो सकते हैं कि मत्ती ने ऐसे क्यों लिखा, जबकि उसके श्रोता तो मुख्यतः यहूदी थे। पहला यह है कि उसके श्रोता मुख्यतः तो यहूदी थे परंतु केवल यहूदी ही नहीं थे। इसलिए, उसने संभवतः उन अरामी शब्दों का अनुवाद उन गैर-यहूदियों के लिए किया होगा जो उसके श्रोताओं में सम्मिलित हों। दूसरा यह है कि संभवतः मत्ती के श्रोताओं में वे लोग भी शामिल होंगे जो शायद फिलिस्तीन देश से बाहर रहते हों और जिनको अरामी भाषा नहीं आती हो। और तीसरा यह कि मत्ती ने किसी अन्य उपलब्ध स्त्रोत से इस जानकारी को लिया हो और उसे वैसे ही रख दिया हो। उदाहरण के लिए मत्ती 27:46 का अनुवाद मरकुस 15:34 में भी पाया जाता है जिसे मत्ती ने एक स्त्रोत के रूप में शायद प्रयोग किया हो।

इन सारी घटनाओं में, प्रमाण यही दर्शाता है कि मत्ती ने अपना सुसमाचार मूलतः यहूदी मसीहियों के लिए लिखा ताकि वह उनकी उन सभी समस्याओं को संबोधित कर सके जो विशेषकर उनसे सम्बंधित थीं और वे प्रभु यीशु मसीह में अपने विश्वास को दृढ़ता से थामे रहें।

यहाँ हमने पहले सुसमाचार के लेखक और श्रोताओं के विषय में अध्ययन कर लिया है, तो अब हम इस सुसमाचार के लिखे जाने के अवसर को जांचने के लिए तैयार हैं।

अवसर

जब हम पुस्तक के लिखे जाने के अवसर के बारे बात करते हैं तो इसके ऐतिहासिक संदर्भ से संबंधित कई बातें हमारे मन में आती हैं – जैसे इसके लिखे जाने का समय, लिखे जाने का स्थान, संभावित श्रोता और लिखे जाने का उद्देश्य। जब हम यह जान लेते हैं कि यह पुस्तक कब, कहाँ, किसको और क्यों लिखी गई तो यह सब बातें इसके संदर्भ के बारे में बहुत सारी जानकारी प्रदान करता है। यह हमें इसके ऐतिहासिक परिदृष्य, व्याकरण एवं शब्दावली, धार्मिक एवं सामाजिक परिकल्पनाओं और इसकी लेखन शैली को समझने में सहायता करता है।

हम मत्ती रचित सुसमाचार के लिखे जाने के निम्न तीन पहलुओं का अवलोकन करेंगे : लिखे जाने का समय; लेखक तथा श्रोताओं की भौगोलिक स्थिति; और उद्देश्य जिसके लिए मत्ती ने यह सुसमाचार लिखा। आइये हम मत्ती रचित सुसमाचार के लिखे जाने के समय के साथ आरंभ करें।

समय

सबसे पहले, जैसा कि अधिकांश विद्वानों का मानना है कि संभवतः मत्ती ने मरकुस रचित सुसमाचार को अपने एक प्राथमिक स्त्रोत के रूप में उपयोग किया था। जैसे कि हम बाद के अध्यायों में देखेंगे कि मरकुस रचित सुसमाचार 64 ईस्वी के लगभग लिखा गया होगा। यदि यह सही है तो मत्ती के लिखे जाने का समय 60 के दशक के मध्य से अंत तक हो सकता है।

दूसरी बात, मत्ती यीशु का चेला था। इसका अर्थ है कि जब वह यीशु के साथ सेवा में जुड़ा तो वह एक व्यस्क पुरुष था, लगभग 30 ईस्वी के दौरान। इसलिए यदि मत्ती की आयु बहुत ही अधिक न हुई हो तो उसने अपने सुसमाचार को पहली सदी के अंत तक ही लिखा होगा।

यह हमें उस समय के एक विशाल दायरे को प्रदान करता है जिसमें मत्ती ने अपना सुसमाचार लिखा। परन्तु हम मत्ती के लेखन के एक विशेष विवरण को देखकर उसके लिखे जाने के समय को और अधिक विशिष्ट रूप में देख सकते हैं। विशेषकर, मत्ती ने बार-बार मंदिर का उल्लेख किया है, और इसके साथ ही सदूकियों का भी जो मंदिर से जुड़े हुए थे। इनमें से कुछ बातें तो लगभग ऐतिहासिक हैं, परंतु कुछ बातें यह दर्शाती हैं कि मंदिर और सदूकी दोनों मत्ती के लिखे जाने के समय महत्वपूर्ण थे। क्योंकि मंदिर का विनाश 70 ईस्वी में किया गया था, इसलिए ये बातें तब अधिक अर्थ को रखती हैं यदि मत्ती ने मंदिर के विनाश से पूर्व यह सुसमाचार लिखा हो।

इन प्रमाणों के प्रकाश में, यह निष्कर्ष निकलना सबसे अच्छा होगा कि मत्ती ने अपना सुसमाचार 60 के दशक के अंत अर्थात् 67 या 68 ईस्वी में लिखा था। निश्चित रूप से सटीक जानकारी संभव नहीं है। परन्तु अच्छी बात यह है कि जहाँ मत्ती के लिखे जाने के समय के बारे में पता लगना सहायक है, वहीँ यह जरूरी नहीं है कि उसके लिखे जाने का सटीक समय उसकी शिक्षाओं को समझने में महत्वपूर्ण हो।

हमने यहाँ पर इस सुसमाचार के लिखे जाने के समय के बारे में देख लिया है, इसलिए आइए हम लेखक तथा श्रोताओं की भौगोलिक स्थिति के प्रश्न की ओर मुड़ें।

स्थान

हमें यह कहकर आरंभ करना चाहिए कि इस सुसमाचार के लिखे जाने के स्थान के विषय में विद्वानों में बहुत तर्क-वितर्क हुआ है, इसलिए हमारे निष्कर्ष में हमें हठीला नहीं बनना है। परन्तु फिर भी कई बातों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

पहली यह कि क्योंकि मत्ती ने मुख्यतः यहूदी मसीहियों को यह सुसमाचार लिखा था इसलिए यह संभव है कि यह सुसमाचार उन लोगों को संबोधित है जो यहूदी बाहुल्य क्षेत्र में रहते थे। फिलिस्तीन एक संभावित क्षेत्र है क्योंकि यह यहूदियों की पारम्परिक मातृभूमि था और क्योंकि वे वहीं पर केन्द्रित थे।

लेकिन सीरिया के कुछ क्षेत्रों में भी काफी यहूदी रहा करते थे। और सीरिया के अन्ताकिया के बिषप इग्नेशियस, जो कलीसिया के आदि पैतृकों में से एक थे, उन्होंने भी मत्ती के सुसमाचार से अपनी परिचितता प्रकट की थी। इस कारण से कई विद्वानों ने यह माना है कि मत्ती ने सीरिया के अन्ताकिया के विश्वासियों को यह सुसमाचार लिखा था।

और निसंदेह हम इस सम्भावना को भी हटा नहीं सकते कि मत्ती के मन में विशाल श्रोतागण थे, जो कि शायद भूमध्यसागरीय क्षेत्र में रहने वाले सामान्य यहूदी मसीही थे।

रोमी साम्राज्य में पाया जाने वाला फिलिस्तीन, सीरिया या अन्य यहूदी बाहुल्य क्षेत्र मत्ती के एक मज़बूत यहूदी चरित्र के सुसमाचार का एक उपयुक्त संभावित स्थान हो सकता है।

> पहला सदी में, यहूदी लोग लगभग रोमी साम्राज्य में फैले हुए थे, और पूर्व दिशा तक भी फैले थे। यह काफी पुरानी बात है। बेबीलोन की बंधुवाई के समय से ही यहूदी लोग फिलिस्तीन देश से बाहर रहने लग गए थे। और वे वहाँ पर पूर्व दिशा की छोर तक बस गए थे। जो मेसोपोटामिया या आधुनिक इराक है। तब वे सीरिया, दमिष्क आए और फिर तितर-बितर होकर रहने लगे। तितर-बितर होना यहूदी लोगों के फैल जाने के लिए कहा जाता है – हाँ और वे पश्चिम की ओर एशिया माईनर, जो आधुनिक तुर्की है तक फैल गए, यहाँ तक कि वे रोम तक पहुँच गए – रोम में रोमी जनसंख्या टाइबर नदी के किनारे बस गई और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वे उत्तरी अफ्रीका में भी बस गए थे। यह हम शिमौन कुरैनी के सुसमाचारों में पढ़ते हैं . . . उत्तरी अफ्रीका से यरूशलेम की ओर। तो हम इस बात से अनुमान लगा सकते हैं कि आधे रोमी सम्राज्य और वहां से पूर्व दिशा की छोर तक के देशों में यहूदी लोग वास करते थे।
>
> डॉ. पीटर वाकर

यहाँ पर हमने मत्ती के सुसमाचार के समय तथा स्थान का अध्ययन कर लिया है, इसलिए अब हम इस सुसमाचार के लिखने में मत्ती के उद्देश्य पर ध्यान दे सकते हैं।

उद्देश्य

सामान्य तरीके से कहें तो मत्ती ने यह सुसमाचार इसलिए लिखा कि यीशु कौन था और उसने क्या किया था, इसका सच्चा इतिहास बहुत ही महत्वपूर्ण था। परंतु उसके पास विशिष्ट और तात्कालिक उद्देश्य भी थे। विशेषकर, मत्ती ने अपने यहूदी श्रोताओं को इसलिए लिखा कि वे अपने मसीहा राजा के रूप में यीशु पर अपने विश्वास को रखें।

जब मत्ती ने अपने सुसमाचार को लिखा तो उस समय यहूदी अधिकारी यहूदी मसीहियों का तिरस्कार करते थे। केवल यहूदी अधिकारी ही नहीं बल्कि उनके मित्र तथा परिवार के सदस्य भी उनका तिरस्कार करते थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि भूमध्यसागरीय प्रदेशों में यहूदी मसीहियों के लिए सताव उनकी जीवनशैली बन गया था।

जैसा कि हम प्रेरितों के काम 8:1 में पढ़ते हैं :

> उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए। (प्रेरितों के काम 8:1)

सताव के कारण यीशु को अपने मसीहा के रूप में स्वीकार करने वाले यहूदियों के समक्ष यह परीक्षा हमेशा रहती थी कि वे अपने पुराने जीवन की ओर लौट जाएं और मसीहियत को त्याग दें। इस परीक्षा के प्रत्युत्तर के रूप में मत्ती ने उन्हें स्मरण दिलाने के लिए लिखा कि यीशु ही सच्चा मसीहा था जो स्वर्ग का राज्य लेकर आया था। उसका सुसमाचार प्रोत्साहन और राहत की कहानी था। परन्तु यह चुनौती की कहानी भी था क्योंकि यीशु वैसा राज्य लेकर नहीं आया था जिसकी उन्होंने अपेक्षा की थी और राज्य की मांगें भी बहुत बड़ी थीं।

इस संदर्भ में, मत्ती ने अपने श्रोताओं को आश्वासन दिलाया कि यीशु ने मसीहा के राज्य की पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा करना आरंभ कर दिया है। साथ ही यह भी कि स्वर्ग का राज्य अभी पूरा नहीं हुआ है। इसलिए मत्ती ने यहूदी विश्वासियों को विश्वास में तब तक बने रहने के लिए लिखा है जब तक कि राजा स्वंय सब बातों को ठीक करने के लिए पुनः नहीं लौटता है, अर्थात् तब तक जब तक कि यीशु अपने साम्राज्य के सभी शत्रुओं का विनाश नहीं कर लेता और अपने राज्य की आशीषों का पूर्ण अनुभव करने के लिए अपने विश्वासयोग्य लोगों को बुला नहीं लेता।

इसीलिए मत्ती ने बार-बार स्वर्ग के राज्य का वर्णन किया है। यहाँ तक कि उसने "राजा" तथा "राज्य" जैसे शब्दों का प्रयोग 75 बार से भी अधिक बार अपने सुसमाचार में किया है। अन्य तीन सुसमाचार लेखकों ने मिलकर भी इन शब्दों का प्रयोग लगभग 110 बार से भी कम किया है। मत्ती के लिए अपने यहूदी श्रोताओं को उत्साहित करने का सबसे उपयुक्त माध्यम यही था कि वह उन्हें उनके मसीहा राजा तथा उसके राज्य के बारे में बताए।

> मत्ती के सुसमाचार में हम स्वर्ग के राज्य के बारे में अधिक महत्व पाते हैं। मत्ती ने अपने सुसमाचार का प्रारंभ यीशु की वंशावली बताकर किया है ताकि इस बात का प्रमाण दे सके कि यीशु सच्चा उत्तराधिकारी है और दाऊद के वंश का राजा है। यही दाऊद के वंश का राजा यीशु नासरी है। उसके श्रोता, उसके प्राथमिक श्रोता, मुख्यतः यहूदी थे, हम ऐसा विश्वास करते हैं और यह पुस्तक लोगों से कहती है, "यह तुम्हारा यथोचित राजा है।" और वह यह जोर देकर कहता है कि स्वर्ग का राज्य इस बात की ठोस अभिव्यक्ति है और अपने सुसमाचार में "स्वर्ग के राज्य" को दर्शा कर यह बताता है कि मसीह का राज्य सभी लोगों तथा सभी क्षेत्रों पर प्रकट है। यह अधिकार का प्रश्न है। फरीसियों एवं सदूकियों ने हमेशा यीशु से पूछा, "तू किस अधिकार से ये सभी काम करता है?" यह सुसमाचार, यीशु के इन शब्दों के साथ समाप्त होता है, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" और राज्य का यह विचार दाऊद के सिंहासन के राजा, जिसकी आशा और प्रतीक्षा लोगों ने की थी, से बढ़कर है। यही बात मत्ती ने कही थी की मसीह इस सृष्टि के हर एक कोने एवं छोर का राजा है।
>
> रेव्ह. जिम मैपल्स

यहाँ पर हमने मत्ती के सुसमाचार की पृष्ठभूमि का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए अब हम इसकी संरचना तथा विषय-वस्तु का अध्ययन करें।

संरचना तथा विषय-वस्तु

विद्वानों में मत्ती रचित सुसमाचार की संरचना की कुछ बातों के बारे में काफी सहमति पाई जाती है। इस सहमति का कारण यह है कि मत्ती ने इसके लिए हमें बहुत महत्वपूर्ण कुँजी दी है। पाँच अलग-अलग स्थानों पर वह "जब यीशु ने यह कहना समाप्त किया" वाक्यांश का प्रयोग करता है जो सुसमाचार में प्रमुख परिवर्तन की ओर संकेत करते है। कभी-कभी यह वाक्यांश प्रत्येक प्रमुख भाग के अंत में प्रकट होता है तो कभी कभी प्रमुख भाग के आरंभ में। लेकिन यह सदैव प्रमुख परिवर्तन की ओर संकेत करता है।

इन संरचनीय सूचकों का अनुकरण करते हुए अधिकांश विद्वान मानते हैं कि मत्ती रचित सुसमाचार को सात भागों में बांटा जा सकता है। पाँच मुख्य भाग हैं जो परिवर्तनरुपी कथनों से अलग किए गए हैं। यह हमें मत्ती 7:28, 11:1, 13:53, 19:1 और 26:1 में मिलते हैं। मत्ती ने अपने सुसमाचार में परिचयात्मक विवरण और समापन विवरण को सम्मिलित किया है।

- मत्ती 1:1–2:23 में सुसमाचार परिचयात्मक कहानी के साथ प्रारंभ होता है जिसमें उसने यीशु को मसीहा राजा के रूप में प्रस्तुत किया है।
- मत्ती 3:1–7:29 में पहला मुख्य भाग राज्य के सुसमाचार का वर्णन करता है।
- मत्ती 8:1–11:1 में दूसरा मुख्य भाग राज्य के विस्तार पर केन्द्रित है।
- मत्ती 11:2–13:53 में तीसरा मुख्य भाग राज्य के चिह्न एवं दृष्टांतों को दर्शाता है।
- 13:54 से प्रारंभ होकर 18:35 तक मत्ती के वर्णन का चौथा मुख्य भाग विश्वास और महानता पर केन्द्रित है।
- मत्ती 19:1–25:46 में पाँचवा और अंतिम मुख्य भाग वर्तमान में राज्य के प्रति विरोध तथा भविष्य में राज्य की विजय पर केन्द्रित है।
- मत्ती 26:1–28:20 में अंत में उपसंहार है जो राजा की मृत्यु तथा पुनरूत्थान का वर्णन करता है।

मत्ती के सुसमाचार के ये सारे भाग उस यीशु की कहानी को आगे बढ़ाते हैं जो मसीहा राजा है और जो स्वर्ग के राज्य को धरती पर लेकर आया है।

मत्ती 1:1-2:23 में पाए जाने वाले परिचय से आरम्भ करके, आइए इन सारे भागों को ध्यान से देखें।

परिचय : मसीहा राजा

मत्ती रचित सुसमाचार का परिचय हमें मसीहा राजा के रूप में यीशु का परिचय देता है और यह दो भागों में विभाजित हैः वंशावली व यीशु के जन्म की कहानी।

वंशावली

वंशावली मत्ती 1:1-17 में पाई जाती है। तकनीकी रूप से, पहला पद वास्तव में एक परिचय या शीर्षक है, जिसमें मत्ती ने अपनी मुख्य बात को बताया है, अर्थात् यह कि यीशु इस्राएल का मसीहा राजा है।

मत्ती 1:1 में ऐसा लिखा है :

> **इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली। (मत्ती 1:1)**

आरंभ से ही मत्ती ने इस्राएल के राजा दाऊद और यहूदी लोगों के पिता अब्राहम पर विशेष बल दिया है।

इस आरंभिक कथन के बाद दूसरे पद से ही वंशावली आरम्भ होती है। मत्ती 1:17 के अनुसार वंशावली तीन खंडों में विभाजित की गई है। प्रत्येक खंड में चौदह वंश हैं। पहला खंड अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा से आरंभ होता है जिसमें अब्राहम के साथ यह वाचा बांधी गई कि उसके वंश संसार पर राज्य करेंगे।

दूसरा खंड राजा दाऊद के साथ और दाऊद के राज्य को सर्वदा तक स्थापित करने के द्वारा अब्राहम से की गई परमेश्वर की वाचा को पूरा करने की प्रतिज्ञा के साथ आरंभ होता है। दूसरा खंड परमेश्वर के लोगों के अपने पाप के कारण तथा वाचा तोड़ने के कारण प्रतिज्ञा की भूमि से बंधुवाई में चले जाने के साथ समाप्त होता है।

वंशावली के तीसरे खंड में बंधुवाई से यीशु के जन्म का वर्णन पाया जाता है। इस्राएल ने परमेश्वर की वाचा को तोड़ा और इस वाचा के श्रापों के अधीन हो गए। परंतु परमेश्वर फिर भी इस्राएल को अब्राहम और दाऊद से की गई वाचाओं को पूरा करने के द्वारा आशीष देना चाहता था। इस्राएल के पूर्वकाल के राजाओं ने इन वाचाओं का पालन नहीं किया था। परंतु अब इस्राएल का अंतिम राजा जो इस्राएल के भविष्य को निर्धारित करेगा, अंततः आ गया था।

यीशु के पूर्वजों की सूची मत्ती 1:16 में समाप्त होती है, जहाँ हम इस प्रकार पढ़ते हैं :

> **और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ; जो मरियम का पति था जिस से यीशु जो मसीह कहलाता है, उत्पन्न हुआ। (मत्ती 1:16)**

इस प्रकार मत्ती ने यह प्रमाणित कर दिया कि यीशु के पास अपने पिता युसुफ के द्वारा दाऊद के सिंहासन का वैधानिक अधिकार था।

> भविष्यवाणी के प्रकाशन के अनुसार मसीह को दाऊद के वंश का होना चाहिए क्योंकि ऐसी ही भविष्यवाणी की गई थी। और इसकी पृष्ठभूमि उत्पत्ति के पुस्तक में पाई जाती है जहाँ पर यहूदा के गोत्र के लिए भविष्यवाणी की गई थी कि उस में से राजा निकलेगा। वह भविष्यवाणी दाऊद पर पूरी होती है, राजा दाऊद, जो अपने आप में इस्राएल का एक महानतम राजा था। उसके बाद जितने भी राजा आए उनकी तुलना राजा दाऊद के अनुकूल या प्रतिकूल से ही की जाती रही है। फिर हम जानते हैं कि दाऊद के साथ तो वाचा बांधी गई थी। जब नातान नबी से दाऊद ने परमेश्वर के लिए मंदिर बनाने की इच्छा जताई तो नातान ने वापस आकर कहा, "तू यहोवा के लिए घर नहीं बनाएगा; यहोवा तेरे लिए घर बनाएगा।" यहाँ घर का तात्पर्य उसके वंश से है। यह 2 शमूएल 7 में पाया जाता है और वह भविष्यवाणी कि यहोवा उसके लिए एक घर बनाएगा, उसका राज्य सर्वदा स्थिर रहेगा, कि उसका वंश सर्वदा दाऊद के सिंहासन पर राज करेगा, मसीह की भविष्यवाणी की नींव ठहरी जो कालान्तर में पूरी हुई। और जब भविष्यवक्ताओं ने दाऊद के वंश और उसके राज्य के विघटन की ओर ईशारा किया और उस आशा की ओर आगे देखा कि परमेश्वर दाऊद के राज्य की महिमा को पुनः स्थापित करेगा, तो दाऊद के वंश से ही परमेश्वर एक राजा को खड़ा करेगा। इसलिए राजा, अर्थात् मसीहा को दाऊद के वंश से ही आना था।
>
> डॉ. मार्क स्ट्रास

यीशु की वंशावली के पश्चात्, हम उसके जन्म की कहानी को पाते हैं।

यीशु के जन्म का विवरण

यीशु के जन्म की कहानी मत्ती 1:18–2:23 में पाई जाती है। यह एक संक्षिप्त भाग है, इसमें केवल 31 पद हैं जबकि लूका रचित सुसमाचार के इस अनुभाग में 116 पद पाए जाते हैं। इस अनुभाग में मत्ती का उद्देश्य सीमित था। सभी पाँचों अनुच्छेदों की रचना एक महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान देने के लिए की गई थी : यीशु अर्थात् मसीहा का जन्म हो चुका है। प्रत्येक अनुच्छेद एक संक्षिप्त कहानी बताता है, और फिर इसे स्पष्ट करता है कि वह कहानी किस प्रकार मसीहा के लिए पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा करती है।

यीशु के जन्म के विवरण के बारे में सबसे रूचिकर बात हम यह सीखते हैं कि उसका कोई मानवीय पिता नहीं था। बल्कि, परमेश्वर ही उसका पिता था। पवित्र आत्मा के द्वारा मरियम गर्भवती हुई जबकि वह कुँवारी ही थी।

मसीहियत के कुछ आलोचकों का मानना है कि यह यीशु की वंशावली की कमजोरी है, क्योंकि वह शारीरिक रूप से युसुफ के वंश का नहीं था, जिसके द्वारा उसने दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी होने का दावा किया था। परंतु यह तो स्वीकृत परंपरा है कि बाइबल की वंशावली, जैसे 1 इतिहास 1-9 में वर्णित है, गोद लिए गए संतानों की वंशावली भी गोद लेनेवाले माता-पिता की वंशावली से जोड़ी जाती है।

इससे बढ़कर, क्योंकि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, इसलिए वह संपूर्णतः ईश्वरीय था। इसका अर्थ था कि वह परमेश्वर की वाचा का सिद्ध रूप से पालन कर सकता था। केवल मानवीय राजाओं ने ही परमेश्वर की वाचा का सिद्ध रूप से पालन नहीं किया। इसलिए उन्होंने कभी भी परमेश्वर की वाचा की आशीष जिसकी प्रतिज्ञा अब्राहम तथा दाऊद से की गई थी, का भरपूर आनंद नहीं उठाया। अतः परमेश्वर ने अपने सिद्ध पुत्र को राजा होने के लिए भेजा ताकि उसकी वाचा सिद्ध रूप से पूरी की जा सके और उसकी आशीष की प्रतिज्ञाएँ पूरी हो सकें।

> यह स्पष्ट है कि मसीहा मनुष्य के रूप में दाऊद के वंश से ही आता है। इस संबंध में कई महत्वपूर्ण सच्चाईयाँ हैं। परंतु इस बात का अनुभव करना भी महत्वपूर्ण है कि मसीहा परमेश्वर अर्थात् ईश्वरीय भी है। यह ऐसा क्यों है? यह ऐसा इस कारण से है कि मनुष्य होने के नाते हमारी समस्या परमेश्वर के सामने यह है कि हमने उसके विरुद्ध पाप किया है। उसे इसका उत्तर प्रदान करना है। उसी को ही इस समस्या का समाधान प्रदान करना है। पाप क्षमा की समस्या जिसके बारे में हम कभी-कभी बात करते हैं, परमेश्वर उसको ऐसे ही अनदेखा नहीं करता है। यह ऐसा नहीं है जिसके बारे में वह कहे, "मैं देख लूँगा," या "तुम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो।" परमेश्वर पवित्र परमेश्वर है। परमेश्वर धर्मी और न्यायी है। वह हमारे पापों को ऐसे ही अनदेखा नहीं करेगा। ऐसा करना तो मानो उसका अपने अस्तित्व से इनकार करना है। इसलिए, हमें क्षमा प्रदान करने के लिए उसी को ही प्रारंभ करना है। उसकी अपनी धार्मिक मांग की परिपूर्णता के लिए उसको ही समाधान उपलब्ध कराना है। स्वंय परमेश्वर को यह करना है। जब आप पुराना नियम पढ़ते हैं तो यह बार-बार आपके सम्मुख आता है। आप योना 2:9 के बारे में सोचते हैं, "उद्धार यहोवा का है।" यह परमेश्वर को उपलब्ध कराना है। परमेश्वर को ही यह साधन उपलब्ध कराना है। परमेश्वर ही है जो हमें क्षमा प्रदान करेगा। इसलिए यदि मसीहा के द्वारा उद्धार है तो उसी को ही मनुष्य बनकर हमारा प्रतिनिधित्व करना है। इसके साथ-साथ उसको प्रभु भी होना है। प्रभु जो आने वाला है। प्रभु जो उद्धार देता है। प्रभु जो अपनी पवित्रता और धार्मिकता को पूरा करता है] और इसीलिए मसीहा को ईश्वरीय होना आवश्यक है।
>
> डॉ. स्टीफन वेल्लम

मत्ती ने अपने सुसमाचार के परिचय में यीशु को मसीहा राजा के रूप में प्रस्तुत किया है, अर्थात् दाऊद का राजकीय पुत्र जिसने उन सब आशीषों को प्राप्त किया जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम तथा इस्राएल के लोगों से की थी। इस प्रकार मत्ती ने उस अदभुत शुभ सन्देश के लिए मंच तैयार किया जो उसकी शेष पुस्तक का विषय है।

परिचय के बाद सुसमाचार के पाँच मुख्य भाग हैं। प्रत्येक खंड दो भागों में विभाजित हैः कहानी खंड जिसमें यीशु के कार्यों का वर्णन है और उपदेश खंड जिसमें मत्ती बताता है कि यीशु ने क्या कहा।

राज्य का सुसमाचार

मत्ती के सुसमाचार का पहला प्रमुख खंड स्वर्ग के राज्य की कहानी का विवरण देता है। यह खंड मत्ती 3:1-7:29 तक पाया जाता है।

मसीहा आ गया था

कहानी खंड मत्ती 3:1 से प्रारंभ होकर 4:25 में समाप्त होता है। यहाँ मत्ती यह घोषणा करता है कि मसीहा राजा आ गया था और वह स्वर्ग के राज्य को धरती पर ले आया था।

कहानी का पहला भाग मत्ती 3:1-12 में पाया जाता है जहाँ पर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यह घोषणा की कि मसीह शीघ्र आएगा और अपने विश्वासी लोगों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। लगभग 400 वर्षों तक हठीले लोगों के प्रति परमेश्वर के दंड के कारण, इस्राएल में पवित्र आत्मा असक्रिय था। परंतु अब, जैसा कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी, जब पवित्र आत्मा उण्डेला जाएगा तो एक नए युग का उदय होगा।

मत्ती 3:13-17 में कहानी यीशु के बपतिस्मा तक जारी रहती है। इस घटना में पवित्र आत्मा यीशु पर उतर आता है, मसीह की सेवकाई के लिए उसको अभिषेक करता है और पिता भजन 2:7 के राजकीय शीर्षक को मसीह के लिए लागू करते हुए स्वर्ग से यह घोषणा करता है, "यह मेरा पुत्र है।"

स्वर्गीय वाणी यशायाह 42:1-2 के दुःख उठाने वाले सेवक की ओर संकेत करती है जिसमें यीशु को इस प्रकार वर्णित किया गया है, "जिसे मैं प्रेम करता हूँ; जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।" यीशु राजकीय मसीहा था, परंतु वह एक भिन्न प्रकार का राजा होगा। वह अपनी बुलाहट को दुःख उठाने के द्वारा पूरा करेगा।

मत्ती 4:1-11 में पाए जाने वाले कहानी खंड के अगले भाग में, शैतान ने यीशु के राजकीय दुःख उठाने वाले मसीहा की भूमिका को चुनौती दी। तीन बार उसने यीशु को दुःख उठाए बिना ही मसीहा बनने की परीक्षा में डालते हुए यह कहा, "मनुष्यों की भाँति भूखा न रह। दुःख उठाए बिना ही लोगों को विश्वास करने के लिए विवश कर। बिन दुःख के संसार पर राज्य कर।" परंतु हर बार यीशु ने शैतान द्वारा सुझाए आसान मार्ग को ठुकराया क्योंकि यह उसके दुःख उठाने वाले मसीहा के व्यक्तित्व का विरोधी होता।

तब मत्ती 4:12-17 से यीशु ने राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा अपने सार्वजनिक मसीहा मिशन को आरंभ किया।

सुनिए मत्ती ने किस प्रकार यीशु के संदेश का सारांश 4:17 में प्रस्तुत किया :

> उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है। (मत्ती 4:17)

मत्ती के अनुसार यीशु ने जो सुसमाचर प्रचार किया वह यह है कि स्वर्ग का राज्य निकट है– और अपनी स्वंय की सेवकाई के द्वारा यीशु स्वर्ग के राज्य को धरती पर लाने वाले थे। यह राज्य उन सबको मिल सकता है जो अपने पापों से पश्चाताप करके यीशु को अपना राजा मानकर उसका अनुकरण करें।

"स्वर्ग का राज्य" वाक्यांश मत्ती के सुसमाचार और केवल मत्ती के सुसमाचार में ही प्रयोग किया गया है। मैं इसको "परमेश्वर के राज्य" का पर्याय मानता हूँ। मैं उन सभी विद्वानों से सहमत हूँ जो यह कहते हैं कि उनमें कोई अंतर नहीं है। सच्चाई तो यह है कि यीशु ने कहा कि यह निकट है या दूसरे अनुवाद इसे इस प्रकार अनुवाद करते हैं, "बस पास ही है" इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि परमेश्वर का अंतिम दिन का राज्य यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा आ चुका है। लेकिन अभी इसकी परिपूर्णता नहीं हुई है। इसके लिए जो शब्द प्रयोग होता है वह "पूर्णता" है जो यीशु के दूसरे आगमन पर पूरा होगा कि मसीही लोग उसके साथ वास करेंगे। उन्होंने अपना एक पांव परमेश्वर के अंतिम दिन के राज्य में रख लिया है लेकिन उनका दूसरा पांव अभी परमेश्वर के राज्य के अंतिम दिन में नहीं पहुँचा है। और मसीही चेलेपन की मुख्य चुनौती जीवन और जीवन के निर्णयों के विषय में है, कि हम जीवन के बारे में कैसे सोचते हैं, इसी के सन्दर्भ में यह है कि स्वर्ग का राज्य आ चुका है और दूसरी ओर इसका पूर्णता के साथ आना अभी बाकी है।

डॉ. डेविड बौएर

जब यीशु गांव गांव सुसमाचार प्रचार करता हुआ फिरा कि "पश्चाताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है," या "पास है," तो इसमें वह कई संदेश दे रहा था। वह कह रहा था, सबसे पहले कि उसमें स्वर्ग का राज्य था, और उनके मध्य था। और उसने इसे अपनी अधिकारपूर्ण शिक्षा, दुष्टात्माओं को निकालने, और उन पर अधिकार करने एवं चंगाई की सेवकाई के द्वारा प्रमाणित किया। इसलिए, पहली बात यीशु यह कह रहा था कि राज्य और राजा का अधिकार मेरे पास है, और यह यहीं तुम्हारे मध्य है। परंतु दूसरी बात जो वह कह रहा था वह यह है कि राज्य आने वाला है, राज्य अपनी परिपूर्णता में अभी नहीं आया है, लेकिन भविष्य में इसकी परिपूर्णता सबको दिखाई देगी। तो यही यीशु कह रहा था कि "स्वर्ग का राज्य" निकट है। इसलिए उसने लोगों को पश्चाताप करने का निमंत्रण दिया, क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है, वह उन्हें स्वयं राजा के प्रति समर्पण करने के लिए बुला रहा था कि अपने समर्पण और आज्ञाकारिता के द्वारा और राजा का वास्तव में अनुकरण करने के द्वारा वे परमेश्वर के लोगों में सम्मिलित और पुनः सम्मिलित किए जाएंगे। इसलिए यह राजा के प्रति ऐसा समर्पण है जो पश्चाताप के द्वारा चिन्हित होता है।

डॉ. ग्रेग पेरी

मत्ती 4:18-22 में यीशु ने अपने चेलों को बुलाया। यह एक ऐसा दृश्य है जिसमें मसीहा राजा अपने राज्य के लिए अगुवों की नियुक्ति कर रहा है।

इसके पश्चात् 4:23-25 में मत्ती ने सुसमाचार के आगे के दो भागों का परिदृष्य दिखाया। उसने घोषणा की कि यीशु शिक्षा देते हुए और बीमारों चंगा करते हुए गलील में फिरा। मत्ती अध्याय 5–7 यीशु के उपदेश का वर्णन करते हैं और वहीँ 8–9 अध्याय उसके चंगाई के कार्य का वर्णन करते हैं।

यहाँ पर हमने राज्य के सुसमाचार के मत्ती के वर्णन को देख लिया है, इसलिए आइए अब इसके साथ के उपदेशों की ओर मुड़ें जो मत्ती 5:1–7:29 में पाए जाते हैं।

पहाड़ी उपदेश

इस उपदेश को सामान्यतः पहाड़ी उपदेश कहा जाता है। इस उपदेश में यीशु ने राज्य के नागरिकों के धार्मिक जीवनों का वर्णन किया है। उसने स्पष्ट रूप से इस अनुच्छेद में सात बार राज्य शब्द का प्रयोग किया है और पूरा उपदेश इसी शीर्षक के इर्द-गिर्द घूमता है।

यीशु ने बार-बार इस बात पर बल दिया की धार्मिकता की चुनौती उससे कहीं बड़ी है जितनी यहूदी अगुवों ने कल्पना की थी। उसने इस बात पर भी जोर दिया है कि स्वर्ग का परमेश्वर राज्य के नागरिकों की कल्पनाओं से अधिक निकट है और उनकी कल्पनाओं से अधिक आशीष देने के लिए तैयार है। यह इन दोनों विचारों का संयोजन ही है जो इस सन्देश को इसका विशिष्ट चरित्र प्रदान करता है।

पहाड़ी उपदेश का एक उदाहरण देखिए : व्यभिचार पर यीशु की शिक्षा। यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर की व्यवस्था मांग करती है कि उसका अध्ययन सतही रूप से बढ़कर किया जाए, और उससे भी बढ़कर किया जाए जो यहूदी शिक्षक आम तौर पर सिखाते थे।

सुनिए मत्ती 5:27-28 में यीशु ने क्या कहा :

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। (मत्ती 5:27-28)

जब यीशु ने वह बताया जो "कहा गया था," तो उसने वह कहा जो उस समय के यहूदी शिक्षकों में पवित्रशास्त्र की प्रचलित व्याख्याएँ थीं। कुछ रब्बियों ने शिक्षा दी थी कि पुराने नियम की व्यवस्था में व्यभिचार करने की मनाही है परंतु वे मनुष्य के हृदय की आधारभूत समस्याओं को सुलझाने में नाकाम रहे। परंतु यीशु ने कुछ ऐसी बातों को दर्शाया जो पुराने नियम के दिनों में भी पाई जाती थीं : परमेश्वर केवल बाह्य व्यवहार पर नियंत्रण में ही रुचि नहीं रखता, वह चाहता है कि आज्ञाकारिता मन से निकले।

> मैं सोचता हूँ कि कभी-कभी हमें पुराने नियम और नये नियम को तुलनात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिए। पुराने नियम में परमेश्वर बाहरी बातों को देखता हैः वह चाहता था कि लोगों का खतना हो, वे बलिदान चढाएं और विशेष ठहराए गए दिनों का पालन करें। वह बाहरी धार्मिक अभिव्यक्ति का प्रकार था। और फिर नये नियम में अब यह हृदय का धर्म हो गया है। परमेश्वर हमारा हृदय चाहता है; वह हमारा प्रेम चाहता है। लेकिन यदि केवल हम पुराने नियम, विशेषकर भविष्यवक्ताओं की बातों को ही देखें तो मैं सोचता हूँ कि यह संभव नहीं है। उदाहरण के लिए हम योएल भविष्यवक्ता को ही लें जो यह कहता है, "अपने हृदय फाड़ो, वस्त्र नहीं," यह बाहरी धार्मिक रीति-रिवाजों के विरूद्ध सीधा प्रहार है, जहाँ परमेश्वर लोगों के बाहरी आडंबर नहीं देखना चाहता, परंतु वह तो उनका हृदय चाहता है, वह उनका आंतरिक मन चाहता है, जिससे वे वैसे बनते हैं जैसे वे हैं। आप इसको भज़न 103 में भी देख सकते हैं। "हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह और जो कुछ मुझ में है उसके पवित्र नाम को धन्य कह।" मेरा तात्पर्य यहाँ पर यह है कि भज़नकार लोगों को परमेश्वर को धन्य कहने के लिए बुलाता है, परमेश्वर की आराधना ऐसी करने के लिए कहता है कि जो कुछ उनके पास हैं उससे उसकी आराधना करें। अतः इस प्रकार का विचार कि प्रेम केवल नए नियम में पाया जाता है और हृदय से महसूस किया जाने वाला अनुभव पुराने नियम में नहीं है, यह पुराने नियम में अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचाई भागीदारी की संपूर्ण वास्तविकता के साथ सांमजस्य नहीं रखता है।

डॉ. मार्क गिगनिलियत

हृदय की आज्ञाकारिता पर यीशु के बल देने ने इस बात की अगुवाई की कि वह 5:5 में राज्य के नागरिकों का वर्णन "नम्र" के रूप में, 5:6 में "धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे" के रूप में, 5:8 में "जिन के मन शुद्ध हैं" के रूप में करे। अब यीशु जानता था कि उसके अनुयायी पूरी तरह से इस प्रकार के नागरिकों में नहीं बदल सकते जब तक कि स्वर्ग का राज्य पूर्ण रूप से उनके मध्य नहीं आ जाता। लेकिन फिर भी उसने उन्हें धर्मी बनने के लिए उत्साहित किया। सुनिए उसने मत्ती 5:48 में क्या कहा :

> **इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। (मत्ती 5:48)**

एक भाव में तो इस आज्ञा का पालन किया जाना असंभव है – कोई भी परमेश्वर के बराबर सिद्ध नहीं हो सकता। लेकिन हमें इसके विषय में अधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। इसके विपरित यीशु ने हमें अनुग्रहकारी, उत्साहित करने वाली प्रतिज्ञा भी दी है। अपने पूरे उपदेश में उसने अपने विश्वासयोग्य अनुयायियों को आश्वासन दिया कि राज्य हमारा ही है।

उदाहरण के लिए, मत्ती 5:3-10 में पाए जाने वाले धन्य वचनों में हमें आठ आशीषें मिलती हैं। मध्य की छः प्रतिज्ञाओं में यह प्रतिज्ञा की जाती है कि जब भविष्य में स्वर्ग का राज्य संपूर्ण रुप में आएगा तो ये सभी आशीषें हमें मिलेगी। परंतु पहली और अंतिम आशीष भिन्न है – यीशु ने कहा कि उसके लोगों को राज्य की यह दोनों आशीषें पहले से ही प्राप्त हैं।

सुनिए किस प्रकार यीशु ने मत्ती 5:3, 10 में इन आशीषों का वर्णन किया :

> **धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है . . . धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। (मत्ती 5:3, 10)**

वास्तव में यीशु का अनुकरण करने की चुनौती की समरूपता उस महान प्रतिज्ञा से की गई है कि परमेश्वर की राज्य की सामर्थ पहले से ही हमें उसके राज्य के धर्मी नागरिकों के रूप में परिवर्तित कर रही है।

सुसमाचार के पहले मुख्य खंड में, मत्ती ने यीशु की सेवा के उद्देश्य और सन्देश की ओर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा राज्य के सुसमाचार पर बल दिया। यीशु वह मसीहा राजा था जो स्वर्ग के राज्य को परमेश्वर के लोगों के मध्य लाया। उसने उन्हें उस राज्य के जीवन परिवर्तन करने वाली सामर्थ के विषय सिखाया। और उसने उन्हें प्रतिज्ञा दी कि यदि वे विश्वासयोग्य रहें तो वे उस राज्य की आशीषों के उत्तराधिकारी होंगे जिसे वह अपनी परिपूर्णता में प्रकट होगा।

राज्य का विस्तार

मत्ती के सुसमाचार का दूसरा मुख्य खंड राज्य के विस्तार के विषय में है। यह मत्ती 8:1–11:1 में पाया जाता है।

यीशु के आश्चर्यकर्म तथा प्रतिक्रियाएं

राज्य के विस्तार का वर्णन मत्ती 8:1–9:38 में पाया जाता है। यहाँ यीशु के आश्चर्यकर्म और उनके प्रति लोगों की प्रतिक्रिया का विवरण पाया जाता है।

यह ग्यारह खंड अलग-अलग भागों में विभाजित है- 8:1-4 में यीशु और कोढ़ी, 8:5-13 में सूबेदार का सेवक, 8:14-17 में पतरस की सास, 8:18-27 में तूफान, 8:28-34 में दुष्टात्मा से ग्रसित दो मनुष्य, 9:1-8 में झोले के मारे हुए, 9:9-17 में चुँगी लेनेवाले और पापी, 9:18-26 में एक लड़की और एक महिला, 9:27-31 में दो अंधे, और 9:32-34 में एक और दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य। फिर 9:35-38 में यीशु के तरस खाने के साथ ही यह खंड समाप्त होता है।

समय के अभाव के कारण हम केवल यीशु के जीवन की कुछ घटनाओं का ही अवलोकन ही करेंगे। उसने अपने राज्य के अधिकार का प्रयोग 8:1-4 में एक कोढ़ी, 8:5-13 में एक सरदार के सेवक, 8:14-17 में पतरस की सास, 9:1-8 में एक झोले के मारे, 9:20-22 में बारह वर्ष से लहू बहने वाले महिला और 9:27-31 में दो अंधों को चंगा करने के द्वारा किया।

मत्ती 9:18-26 में उसने एक मृत लड़की को जीवन दान देकर यह प्रमाणित किया कि उसको मृत्यु पर भी सामर्थ और अधिकार प्राप्त है। मत्ती 8:23-27 में एक तूफान को शांत करके उसने यह भी प्रमाणित किया उसको प्रकृति के उपर भी अधिकार प्राप्त है।

इससे बढ़कर, मत्ती 8:28-34 में यीशु ने दो मनुष्य से जो कब्रों में रहते थे और 9:32-34 में एक व्यक्ति से जो बोल नहीं सकता था, दुष्टात्मा को निकालकर शैतान के राज्य के ऊपर अपने अधिकार को प्रमाणित किया। 9:9-17 में मत्ती की चेले के रूप में बुलाहट यीशु की चुँगी लेनेवालों और पापियों के साथ संगति का परिचय कराती है। यीशु ने मत्ती को चुंगी लेने के जीवन को छोड़कर एक नया जीवन शुरू करने के लिए बुलाया। यह परिवर्तन एक आश्चर्यकर्म से कम नहीं था। चुँगी लेनेवालों और पापियों के जीवन के परिवर्तन ने मत्ती को इतना प्रभावित किया कि वह तुरंत उनका यीशु के साथ खाना खाने का वर्णन करने लगा और उसको उनके आनंद का कारण भी स्पष्ट करना पड़ा।

मत्ती ने यीशु की सामर्थ पर ध्यान देने के अतिरिक्त यीशु की सामर्थ के प्रति भीड़ की प्रतिक्रिया पर भी प्रकाश डाला है। आम तौर पर, वे अचंभित हो गए थे। हम यह मत्ती 8:27, 34 और 9:8, 26, 31, और 33 में देख सकते हैं। और उनके आश्चर्य ने उन्हें विरोध करने को प्रेरित किया।

कुछ लोगों ने केवल अविश्वास करके यीशु का विरोध किया। अन्य, विशेषकर यहूदी अगुवों ने उसकी खुलेआम आलोचना की। कुछ यीशु से भयभीत हुए, जैसे कि मत्ती 8:34 में। अन्य घबराए और चकित हुए, जैसे कि मत्ती 9:3 में। कभी-कभी यीशु का सुनियोजित तरीके से विरोध हुआ, जैसे कि मत्ती 9:14 में – यद्यपि यह फिर भी गलत था। और कभी-कभी लोगों ने जानबूझ कर सच्चाई का तिरस्कार करने के द्वारा भी यीशु का विरोध किया, जैसे कि मत्ती 9:34 में। दुर्भाग्यवश, जैसे-जैसे यीशु की सेवकाई जारी रही उसका विरोध भी बढ़ता चला गया।

> जब आप नये नियम का अध्ययन करते हैं तो शायद एक सबसे बड़ी पहेली यह है कि कैसे लोग यीशु का तिरस्कार कर सकते हैं जबकि उन्होंने आश्चर्यकर्मों को होते हुए अपनी आँखों से देखा है। वचन कहता है कि बार-बार जो उसने किया उसको देखकर लोग आश्चर्यचकित हुए। जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि उन्होंने ऐसा क्यों किया तो मैं सोचता हूँ कि हमें मत्ती 22:29 की ओर ध्यान देना चाहिए। यीशु ने फरीसियों से कहा कि तुम धोखे में हो क्योंकि तुम न तो वचन जानते हो और न ही परमेश्वर की सामर्थ। उस सन्दर्भ में उसने यह बात विशेषकर सदूकियों से कही थी, परंतु मैं सोचता हूँ कि यही बात व्यवस्था के शिक्षक, और फरीसियों से भी कही जा सकती थी। उन्होंने लोगों को गलत शिक्षा दी थी; आने वाले मसीहा की अपेक्षाओं के बारे में लोगों को गलत तरीके से सिखाया था। मैं सोचता हूँ कि आज हमारे लिए यहाँ एक बड़ा सबक है – जो लोग गलत तरीके से वचन का प्रयोग करते हैं और झूठी शिक्षा देते हैं, वे लोगों को झूठी आशा देते हैं। और मैं सोचता हूँ कि यही बात पहली सदी के इस्राएल में भी हुई। उन्होंने एक

> मसीह के आगमन की अपेक्षा की थी, और आप इसे राष्ट्रवादी विजय के रूप में कह सकते हैं। और यीशु आया। यद्यपि, उसने वे सब काम किए जो उन्होंने कभी नहीं देखे, और न कभी देखेंगे, फिर भी वे उसका तिरस्कार करते रहे क्योंकि उनके अगुवे हमेशा यीशु के आश्चर्यकर्मों को नीचा दिखाते थे। वे उसे शैतान के समकक्ष मानते थे और कहते थे वह ये काम शैतान की सहायता से करता था। और अंततः दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि झूठी शिक्षा के दशकों और पीढ़ियों के बाद अधिकारी लोगों एवं धार्मिक अधिकारियों के विरोध ने बहुत से लोगों के हृदय को मसीह से अलग कर दिया जबकि उन्होंने बहुत से आश्चर्यकर्मों को देखा था।
>
> रेव्ह. जिम मैपल्स

मत्ती ने 9:35-38 में यीशु के सामर्थी आश्चर्यकर्मों पर आधारित इस कहानी खंड की समाप्ति भीड़ के लिए यीशु के तरस का वर्णन करने के द्वारा की। मत्ती 9:36-38 में इस वर्णन को सुनें।

> जब उस ने भीड़ को देखा तो उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए थे। तब उसने अपने चेलों से कहा, पके हुए खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह उपज काटने के लिये मजदूर भेज दे। **(मत्ती 9:36-38)**

यीशु समझ गया था कि लोगों द्वारा उसे राजा न स्वीकार करने का एक यह कारण था कि उनके अगुवे उनका निरादर करते थे और वे उन्हें सही शिक्षा नहीं देते थे। परंतु वह यह भी जानता था कि उसके आश्चर्यकर्म उनके हृदय को नम्र बना रहे थे और वह उन्हें अपने पीछे चलने के लिए प्रेरित कर रहा था। इसलिए उसने अपने चेलों को निर्देश दिया कि वे प्रार्थना करें कि परमेश्वर प्रचारकों और अगुवों को खड़ा करे, अर्थात् ऐसे लोगों को जो पृथ्वी पर खोए हुए लोगों को परमेश्वर के राज्य में ले आएं, और उन्हें सिखाएं कि वे कैसे धर्मी नागरिक बन सकते हैं।

राजा के राजदूत

राज्य के विस्तार पर आधारित मत्ती के वर्णन को देखने के बाद, आइए अब हम इसी वर्णन से जुड़े उपदेश की ओर मुड़ें। यह मत्ती 10:1–11:1 में पाया जाता है। यह उपदेश चेलों को राजा के राजदूत या उसके प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस खंड में, यीशु ने उस चुनौती का उत्तर दिया जो पिछले वर्णन के अंत में उसके सामने रखी गई थी। अपने चेलों को यह प्रार्थना करने की आज्ञा देने के बाद कि परमेश्वर प्रचारकों और अगुवों को खड़ा करे, यीशु ने सेवकाई के लिए बारह चेलों को सामर्थ देने और अपने समान वचन और कार्य में राज्य की उपस्थिति की घोषणा करने की आज्ञा देने के द्वारा राज्य की व्यक्तिगत सेवा को फैलाया।

जैसे कि हम मत्ती 10:7-8 में पढ़ते हैं, यीशु ने उन्हें इन वचनों के साथ आज्ञा दी :

> और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। **(मत्ती 10:7-8)**

यीशु ने अपने चेलों को बाहर भेजने से पहले कई चेतावनियाँ दीं। जब वे यीशु के उदाहरण का अनुकरण करेंगे तो जीवन सरल नहीं होगा। संसार उनके प्रति दयालु नहीं होगा। उन्हें दुःख उठाने होंगे। उनका उपहास किया जाएगा, वे बंदीगृह में डाले जाएंगे और मार डाले जाएंगे।

परंतु यीशु ने उनसे प्रतिज्ञा की कि स्वर्गीय पिता उनकी सेवकाई को आशिषित करेगा और अंत में राज्य का जीवन उनका होगा। सुनिए कैसे यीशु ने मत्ती 10:39 में अपने चेलों को पुनः आश्वासन दिया :

> **जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा। (मत्ती 10:39)**

यीशु के चेले यीशु की शिक्षा तथा चंगाई की सेवा के लिए अपनी पुरानी जीवन शैली का त्याग कर रहे थे। परंतु यीशु ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि वे राजा यीशु की संगति में सच्चे राज्य का जीवन पाएंगे।

सुसमाचार के दूसरे मुख्य खंड में, हमने देख लिया है कि मत्ती ने राज्य के विस्तार का वर्णन किया, विशेषकर यीशु के सामर्थ के कार्य और चेलों को उसके द्वारा दिए के निर्देशों के सन्दर्भ में। यह हमारे लिए आधुनिक युग की कलीसिया की सेवकाई के लिए एक आदर्श ठहरता है। अब जबकि हम यीशु के सामर्थ पर निर्भर रहते हैं और विश्वासयोग्य चेलों के रूप में उसकी सेवा करते हैं, तो यीशु अपने राज्य को हमारे द्वारा भी बनाएगा और वह हमें स्वर्गीय आशीषों से आशीषित करेगा।

चिह्न और दृष्टांत

मत्ती के सुसमाचार का तीसरा प्रमुख खंड चिन्हों और दृष्टान्तों के द्वारा राजा और उसके राज्य के प्रदर्शन को जारी रखता है, जो मत्ती 11:2–13:53 में पाया जाता है।

चिह्न और प्रतिक्रियाएं

मत्ती का कहानी खंड, यीशु द्वारा दिखाए गए चिह्नों और उन चिह्नों के प्रति प्रतिक्रियाओं पर केन्द्रित है जो मत्ती 11:2–12:50 में पाया जाता है। इन चिह्नों ने दर्शाया कि राजा और उसका राज्य वर्तमान में हैं और इस संबंध में जो झूठी शिक्षा प्रचलित थी, उसे सुधारा। फलस्वरूप, जो आलोचना पहले से ही आरंभ हो चुकी थी, वह बढ़ने और फैलने लगी।

चिह्नों एवं दृष्टांतों की श्रृंखला पाँच मुख्य भागों में विभाजित है : 11:2-19 में यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को आश्वासन दिया कि उसके (यीशु के) चिह्न यह प्रमाणित करते है कि वही मसीहा है जिसने पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ को पूरा किया है, और फिर यीशु ने भीड़ का बुलाया कि वे उसके चिह्नों का प्रत्युत्तर अपने अपने पापों से पश्चाताप करके दें। 11:20-30 में यीशु ने उन शहरों को संबोधित किया जहाँ उसने चिह्न दिखाए थे और उसने अपश्चातापी लोगों को चेतावनी दी और उनको विश्राम देने का प्रस्ताव दिया जो उसके पास आएँगे। जैसे कि वह मत्ती 11:30 में कहता है :

> **क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है। (मत्ती 11:30)**

12:1-21 में मत्ती ने ऐसे कई वृतांतों को आरंभ किया जो यीशु के चिह्नों के प्रति फरीसियों की प्रतिक्रियाओं पर केन्द्रित थे। सबसे पहले, उसने बताया कि किस प्रकार यीशु ने सब्त के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के विषय पर फरीसियों से वाद-विवाद किया और एक व्यक्ति को सब्त के दिन चंगा करके सब्त के ऊपर अपने अधिकार को प्रमाणित किया। यीशु ने सिखाया कि सब्त का दिन चंगाई और जीवन को बचाने के लिए है।

12:22-37 में फरीसियों ने यीशु पर बालजबूल की शक्ति का प्रयोग करने का आरोप लगाया, हालाँकि भीड़ यीशु के आश्चर्यकर्मों को देखकर अचंभित हो गई थी। उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा व्यवस्था के शिक्षकों ने यह माना कि वह तो दुष्टात्मा से ग्रसित है।

12:38-50 में फरीसियों ने अपने पाखण्ड में यीशु से दूसरा चिह्न मांगा, परंतु यीशु ने उन्हें कहा कि योना के चिह्न को छोड़कर उन्हें कोई दूसरा चिह्न नहीं दिया जाएगा। और यह चिन्ह क्या था? जिस प्रकार योना तीन दिन पश्चात् मछली के पेट से निकलने के कारण निनवे के लोगों ने मन फिराया, उसी प्रकार तीन दिन पश्चात् कब्र में से यीशु का भावी पुनरूत्थान भी अन्यजाति के अनेक लोगों को मनफिराव की ओर प्रेरित करेगा।

यह दिखाने के लिए कि कोई भी जाति, गोत्र, भाषा के लोग, जो पश्चाताप करेगें, परमेश्वर उनको स्वीकार करेगा, उसने यहाँ तक कह दिया कि उसकी शारीरिक यहूदी माता और भाई भी उसके परिवार के लोग नहीं हैं। इसके विषय में उसने मत्ती 12:49-50 में यह कहा :

> देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहिन और माता है। (मत्ती 12:49-50)

यहाँ पर हम यीशु द्वारा दिखाए गए चिह्नों के मत्ती के वर्णन को देख चुके हैं, इसलिए आइए अब हम मत्ती 13:1-53 में यीशु के राज्य के दृष्टान्तों के उसके उपदेशों की ओर मुड़ें।

राज्य के दृष्टांत

मत्ती ने यीशु के जाने-पहचाने दृष्टांतों को पाँच भागों में विभाजित किया है।

13:1-23 में बीज बोने वाले का दृष्टांत, 13:24-30 में जंगली बीज का दृष्टांत, 13:31-43 में राई का दाना और खमीर, 13:44-46 में छिपा हुआ धन और मोती, 13:47-53 में जाल का दृष्टांत। ये दृष्टांत परमेश्वर के राज्य के विषय में फैली गलत धारणाओं को दूर करने के लिए कहे गए थे।

कुछ दृष्टांतों, जैसे 13:31-32 में राई के दाने के, 33 में खमीर के, 44 में धन के और 45-46 में मोती के दृष्टांत में यीशु ने यह शिक्षा दी कि स्वर्ग का राज्य अत्यंत बहुमूल्य है इसलिए इसे किसी भी कीमत पर प्राप्त कर लेना चाहिए। एक बार शायद यह महत्वहीन लगे परंतु एक दिन यह अपनी संपूर्ण महिमा में प्रकट होगा।

परंतु यीशु ने अन्य दृष्टांत भी कहे जिनमें राजा यीशु और उसके राज्य को स्वीकार करने में इस्राएल की असफलता को दिखाया गया है। मत्ती 13:1-23 में बीज बोने वाले के दृष्टांत और उसके विवरण में यीशु ने स्पष्ट किया कि विश्वास में कई बाधाएं हैं और अधिकांश लोग राज्य का तिरस्कार कर देंगे।

इस विचार पर 24-30 और 36-43 में जंगली बीज के दाने के दृष्टांत और 47-51 में जाल के दृष्टांत में और अधिक बल दिया गया है। यीशु ने सिखाया कि बहुत से लोग परमेश्वर के राज्य को अपनाने से इनकार करेंगे और अंत में उनका नाश हो जाएगा। ये सभी दृष्टांत यीशु के विरोधियों के लिए स्पष्ट चेतावनी थे; इन दृष्टांतों ने अविश्वासियों को पश्चाताप करने का और एक सच्चे राजा के विश्वासयोग्य अनुयायी बनने का अवसर प्रदान किया।

> मसीह आ गया है। उसने भविष्यवाणियों को पूरा किया है, उसने अपने राज्य को स्थापित किया है। फिर भी, इसकी पूर्णता अभी बाकी है। हम मसीही, जब उस राज्य में प्रवेश करते हैं तो हमें अपनी प्राथमिकता को निरंतर परखने की आवश्यकता है, यदि हमने जैसा उसका अनुकरण करना चाहिए था वैसा अनुकरण नहीं किया तो पश्चाताप करने की आवश्यकता है, इस तथ्य को निश्चित करते हुए कि हम अपने जीवन को उसकी इच्छानुसार जीते हैं, उसकी नैतिकता के साथ सहमति प्रकट करते हैं, जिससे राज्य सम्बंधित है। इसलिए निरंतर पश्चाताप, अंगीकार करने की आवश्यकता है, उसके सम्मुख एक भविष्यवक्ता, एक याजक और एक राजा के रूप आने की आवश्यकता है, जिसका हम आदर्श मानकर

अनुकरण करना चाहते हैं और उसकी सेवा ऐसे करें कि उसके उद्देश्य को अपने जीवन के द्वारा इस संसार में पूरा करें।

डॉ. स्टीफन वेल्लम

हमें मसीहियों को परमेश्वर के राज्य का अनुकरण करने और उसकी इच्छा रखने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। पहला, अपने व्यक्तिगत क्षेत्र में, स्वर्ग के राज्य का अधिकार हमारे जीवन की सामर्थ है। यह हमें अपने आपको परमेश्वर के हाथों में समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करता है कि हम परमेश्वर पर केन्द्रित जीवन जीएं ताकि परमेश्वर का अधिकार जो हमारे जीवन से प्रकट होता है हमारे आत्मिक जीवन का ध्येय बन जाए। दूसरा, हमें स्वर्ग के राज्य को उद्धार के इतिहास के दृष्टिकोण से भी देखने की आवश्यकता है। जब हम यह जानने लगते हैं तो यह उसके उद्धार की योजना को खोलता और पूरा करता है। तब हम यह भी देखेंगे कि स्वर्ग के राज्य की शिक्षा पुराने और नये नियम को एकसूत्र में बांधती है। वह हमें हमारे छुड़ाने वाले परमेश्वर के उद्धार की महान योजना से परिचित कराता है और तब हम उसके गहन उद्देश्य को समझ पाते हैं। तीसरा, स्वर्ग का राज्य बाइबल के उचित दृष्टिकोण का निर्माण करता है और हमें इस बात को समझने में सहायता करता है कि सभी चीजें उसी की हैं। उसके राज्य की पूर्णता होगी और वह इस धरती पर की सभी बुरी शक्तियों का न्याय करेगा और उनको धरती पर से मिटा डालेगा क्योंकि परमेश्वर स्वंय सर्वाधिकार राजा होगा। इसलिए अब हम केवल अपने लिए ही नहीं जीते हैं। हमें अपने पड़ोसियों, समाज और इस संसार की खुशहाली के लिए चिंता करने की आवश्यकता है। हमारे चारों ओर की घटनाओं, चाहे वे पास हों या दूर, की खबर रखने की आवश्यकता है। हमें हमारे कर्त्तव्य के रूप में समाज में प्रवेश करना है और वहां विद्यमान सभी बुरी बातों को बदलना है।

डॉ. स्टीफन चान

विश्वास और महानता

मत्ती का चौथा मुख्य खंड विश्वास और महानता पर केन्द्रित है जो मत्ती 13:54-18:35 में पाया जाता है। यह खंड प्रकट करता है कि यीशु का विश्वासयोग्य चेला बनने का अर्थ क्या है।

यीशु पर विश्वास करने से इनकार

यह कहानी खंड मत्ती 13:54-17:27 में पाया जाता है और इसमें तेरह वृतांत हैं जो उन भिन्न रूपों को दर्शाते हैं जिनमें केवल एक महिला को छोड़कर बाकी सब ने यीशु पर विश्वास करने का विरोध किया।

पहले दो वृतांत, उन दो घटनाओं पर केन्द्रित हैं जब यीशु पर विश्वास करने से पूरी तरह से इनकार कर दिया जाता है। पहला, मत्ती 13:54-58 में जब यीशु अपने नगर नासरत आया तो उसके पड़ोसियों ने उसके आश्चर्यकर्म करने की क्षमता पर विवाद नहीं किया। लेकिन फिर भी उन्होंने ठोकर खाई और उसका तिरस्कार किया। मत्ती 13:58 में हम ऐसा पढ़ते हैं कि विश्वास की कमी के कारण नासरत के लोगों में अधिक आश्चर्यकर्म नहीं हुए।

अगला, 14:1-12 में हेरोदेस एवं यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की मृत्यु के विषय में है। हेरोदेस ने जो यूहन्ना के साथ किया उसके लिए वह परमेश्वर के दंड के योग्य था। लेकिन इससे बढ़कर, पद 1 बताता है कि हेरोदेस ने यीशु की चमत्कार करने की योग्यता पर विवाद नहीं किया। बल्कि उसके सलाहकारों ने माना कि यीशु, यूहन्ना बपतिस्मादाता है और हेरोदेस को दुःख देने के लिए मृतकों में से जी उठा है।

अगले तीन वृतांत यीशु के चेलों पर आधारित हैं और इस पर भी कि उन्हें कैसे विश्वास में बढ़ना है। मत्ती 14:13-21 में पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाने की कहानी है। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे उस भीड़ को भोजन खिलाएं जो उसके पीछे हो ली है, परंतु पद 15 में उसके चेलों ने संदेह किया और उससे शिकायत की कि उनके पास बहुत ही थोड़ा भोजन है। तब यीशु ने उनके भोजन को इतना बढ़ाया कि पांच हजार लोगों ने खाया और बहुत बच भी गया, इस प्रकार उसने अपनी सामर्थ को साबित किया।

मत्ती 14:22-36 में यीशु पानी के ऊपर चला। पहले तो पतरस ने यीशु पर भरोसा जताते हुए नाव से बाहर निकलकर पानी पर पाँव रखा, लेकिन तभी खतरा देखकर वह घबराया और झील में डूबने लगा। उसके बचाने के बाद यीशु ने वचन 31 में ऐसा कहा, "हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?"

मत्ती 15:1-20, यीशु और कुछ फरीसियों के मध्य विवाद का वर्णन करता है। पतरस ने यीशु से एक साधारण बात को स्पष्ट करने के लिए कहा जो यीशु ने कही थी। इसलिए यीशु ने उसे पद 16 में असहमति के साथ इस प्रकार उत्तर दिया, "क्या तुम भी अब तक नासमझ हो?"

मत्ती 15:21-28 ही इन सारे वृतांतों में एक है जिसमें किसी ने यीशु पर पूरा विश्वास किया, एक कनानी स्त्री जिसकी बेटी को दुष्टात्मा ने जकड़ रखा था। अन्य लोगों के असमान उसने यीशु से सहायता के लिए विनती की। और पद 28 में उसने सहमति जताते हुए कहा, "हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है।"

मत्ती अब यीशु के शिष्यों के कमजोर विश्वास की ओर लौटता है। उसने 15:29-39 में चार हजार लोगों को भोजन खिलाने के विषय लिखा। पद 33 में शिष्यों ने उससे पूछा कि इतने लोगों के लिए वे कहाँ से भोजन लाएँगे जबकि उन्होंने उसे पहले भी पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाते हुए देखा था।

मत्ती 16:1-12 में यीशु ने फरीसियों तथा सदूकियों से वाद-विवाद किया। एक समय ऐसा भी आया जब उसने अपने शिष्यों को "फरीसियों के खमीर" से सावधान रहने की चेतावनी दी परंतु उन्होंने सोचा कि वह क्रोधित है क्योंकि उन्होंने अपने साथ रोटी नहीं ली थी। परंतु यीशु ने उन्हें तब स्मरण दिलाया जब उसने हजारों को भोजन खिलाने के लिए रोटी को बढाया और वचन 8 में उसने अपने शिष्यों को "हे अल्पविश्वासियों" करके संबोधित किया।

इसके पश्चात् हम परस्पर संबंधित दो वृतांतों को पाते हैं। एक ओर, 16:13-20 में पतरस का जाना-पहचाना अंगीकार है। मत्ती 16:16 में पतरस ने घोषणा की, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" और यीशु ने पतरस की उसके विश्वास के लिए प्रसंशा की।

परंतु दूसरी ओर 16:21-27 में यीशु ने पतरस को डांटा। यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि वह यरूशलेम दुःख उठाने और मरने के लिए जा रहा है। जब पतरस ने उसे टोका तो यीशु ने उसे पद 23 में डांटा, "शैतान, मेरे सामने से दूर हो।" यीशु ने इसे स्पष्ट किया कि पतरस मनुष्यों के समान सोच रहा था, न कि परमेश्वर के।

इस डांट के पश्चात्, मत्ती 17:1-13 में हम यीशु के रूपान्तरण के विषय में पढ़ते हैं। जब शिष्यों ने यीशु को उसकी महिमा में देखा तो वे वहाँ तंबू बनाना चाहते थे। परंतु पद 12 में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने उन्हें स्मरण दिलाया कि उसकी सच्ची महिमा उसकी मृत्यु एवं पुनरुत्थान के बाद ही प्रकट होगी।

मत्ती 17:14-23 में हम एक जवान के विषय पढ़ते हैं जिसको दुष्टात्मा ने जकड़ रखा था। यीशु के शिष्यों ने प्रयास किया किन्तु वे उसे न निकाल सके। यीशु ने दुष्टात्मा को निकालकर पद 20 में कहा, "तुम में विश्वास की घटी है।"

अंत में, मत्ती 17:24-27 में चुंगी लेनेवाले यीशु के शिष्यों के पास आए और पूछा कि क्या यीशु ने मंदिर का कर चुका दिया। पतरस ने तुरंत उत्तर दिया, और संभवत: डरकर, कि यीशु ने कर चुका दिया है।

तब बाद में पतरस यीशु के पास पैसे लेने के लिए आया और यीशु ने एक आश्चर्यकर्म के द्वारा उसे पैसे दिए और स्पष्ट किया कि पतरस को इसके विषय में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

मत्ती ने उनका उल्लेख किया जिन्होंने उसका तिरस्कार किया था और उस कनानी स्त्री के विश्वास के विषय भी कहा, परंतु उसका मुख्य विषय यह था कि उसके शिष्यों का यीशु में विश्वास बढ़े।

एक बार फिर से मत्ती 18:1-35 में इन कहानियों के साथ यीशु के उपदेश का वर्णन करता है। यह उपदेश परमेश्वर के राज्य के परिवार में सच्ची महानता पर केन्द्रित है, अर्थात् वह महानता जो परमेश्वर के राज्य के भाईयों एवं बहनों की विनम्र सेवा से ही प्राप्त होती है।

परमेश्वर के राज्य में महानता

पिछले अध्याय के अंतिम भाग में, यीशु ने अपने अनुयायियों को परमेश्वर, अर्थात् राजा के पुत्र कहके संबोधित किया। इस पहचान ने मत्ती को अपने सुसमाचार के इस भाग को एक मुख्य प्रश्न के साथ आरंभ करने को प्रेरित किया। जैसे हम मत्ती 18:1 में पढ़ते हैं :

> **"स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?" (मत्ती 18:1)**

यीशु ने इस प्रश्न का उत्तर निर्देश, उदाहरण और दृष्टांत को मिलाकर चार मुख्य खंडों मे दिया। पहला, मत्ती 18:2-4 में यीशु ने अपने चेलों को छोटे बच्चों के समान नम्र जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

उसके विरोधियों के विरोध के मध्य यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि उन्हें स्वर्ग के राज्य में परमेश्वर की संतानों के समान कैसा जीवन जीना चाहिए। उसे मालूम था कि राज्य की भावी पूर्णता का समय अभी नहीं आया था। और वह जानता था कि शत्रु और पाप के विरूद्ध संघर्ष, परमेश्वर के बच्चों के जीवन का हिस्सा होगा।

और 5-14 पदों में उसने सिखाया कि जिस प्रकार स्वर्गीय पिता को अपनी खोई हुई भेड़ की चिंता रहती है ठीक उसी प्रकार वे भी कमजोरों की चिंता किया करें। मत्ती 18:10, 14 में यीशु के कथनों को सुनें :

> **देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना . . . ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो। (मत्ती 18:10, 14)**

यीशु ने मत्ती 18:15-20 में इस विचारधारा को विकसित किया जहां पर उसने मांग की कि उसके अनुयायी तब भी एक-दूसरे के साथ परमेश्वर के सदस्यों के रूप में व्यवहार करें जब पाप उनके पारिवारिक संबंधों में परेशानी उत्पन्न करे। उसने मत्ती 18:21-35 में कहा कि जैसे उनके स्वर्गीय पिता ने उन्हें क्षमा किया है वैसे वे भी पाप करने वाले "भाई" को क्षमा करें।

परमेश्वर की महिमा हमारे दिनों में भी बढ़ रही है, क्योंकि परमेश्वर निरंतर सामर्थ के कार्य कर रहा है और पृथ्वी पर अपने राज्य को बढ़ा रहा है। परंतु जैसे यीशु के दिनों में होता था वैसे ही उसके राज्य का विरोध भी बढ़ता जा रहा है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह हमें बहुत से वरदान देकर हमारी कठिनाईयों और परीक्षाओं में हमारी सहायता करता है। इन वरदानों में धीरज और शांति है, और इसके साथ परमेश्वर की उपस्थिति भी। इनमें सबसे महत्वपूर्ण वरदान तो परमेश्वर के साथ पिता के रूप में हमारा संबंध है। परमेश्वर हमारा ध्यान रखता है और हमारी सुरक्षा करता है, वह हमारी कमजोरियों में हमें समझता और अपनी सहानुभूति प्रकट करता है। और वह मनुष्यों का एक ऐसा परिवार प्रदान करता है जो हमारी सेवा करते हैं और हमें प्रेम करते हैं – अर्थात् कलीसिया, जो परमेश्वर के परिवार में हमारे भाई-बहन हैं।

वर्तमान विरोध तथा भविष्य में विजय

मत्ती के सुसमाचार के पाँचवें मुख्य खंड का शीर्षक स्वर्ग के राज्य का वर्तमान विरोध तथा इसकी भावी विजय है। यह वर्णन मत्ती 19:1-22:46 में पाया जाता है और दर्शाता है कि यीशु ने अपने जीवन के इस समय में बड़े-बड़े विरोधों का सामना कैसे किया।

प्रचंड विरोध

ये अध्याय यीशु के आगे बढ़ने के आधार पर तीन भागों में बंटते हैं। 19:1–20:16 में यीशु को यहूदिया में विरोध का सामना करना पड़ा। वहाँ उसने फरीसियों का और तलाक-संबंधी प्रश्न का सामना किया। उसने उस विरोध का भी सामना किया जो धन तथा सामर्थ के संबंध में गलतफहमियों के कारण उठा।

सुसमाचार के प्रारंभिक अध्यायों में मत्ती ने यीशु और यहूदी अगुवों के मध्य दूरी या तनाव का वर्णन किया है। इस खंड में उसने यह लिखा है कि दोनों के मध्य अब शत्रुता विकसित हो गई थी। उदाहरण के तौर पर फरीसियों ने यीशु से ऐसे प्रश्न पूछना आरंभ किया कि यीशु को फंसा सकें, जैसे कि मत्ती 19:3-9; 21:16, 23 और 22:15-40 में।

एक उदाहरण के तौर पर, मत्ती 22:15 में मत्ती के वर्णन को सुनिए :

> तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उसको किस प्रकार बातों में फंसाएं। (मत्ती 22:15)

इसके साथ-साथ, यीशु ने भी कभी-कभी यहूदी अगुवों को चुनौती दी। इसे हम मत्ती 21:28–22:15 में दो पुत्रों, दुष्ट किसानों और विवाह के भोज के दृष्टांत में पाते हैं।

परंतु झगड़ा सदैव शब्दों तक ही सीमित नहीं था। कभी-कभी तो यह सीधा तथा अधिक भयंकर होता था जैसे कि मत्ती 21:12-16 में यीशु ने मंदिर में लेन-देन करनेवालों के मेज तक पलट दिए थे और उसने उन्हें मंदिर से बाहर भगा दिया था। विशेषकर मत्ती 23:13-35 में हाय के उसके सात श्रापों के शब्द बहुत चुभने वाले थे।

सुनिए मत्ती 23:15 में यीशु ने उन्हें कैसे डांटा :

> हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो उसे अपने से दुगुना नारकीय बना देते हो। (मत्ती 23:15)

निसंदेह, इन अध्यायों के चरित्र केवल यीशु और यहूदी अगुवे ही नहीं हैं। यहूदी अगुवों की शत्रुता उस समय और अधिक बढ़ गई जब भीड़ ने मत्ती 21:1-11 में यीशु को विजय-प्रवेश जैसे अवसरों पर आदर और सम्मान दिया।

इस पूरे खंड में यीशु ने अपने शिष्यों को इस विरोध को दृष्टिकोण में बदलने को उत्साहित किया। मत्ती 19:27-30 में यीशु ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि एक दिन वे भी उसकी महिमा में उसके साथ बैठेंगे। परंतु उसने उन्हें यह चेतावनी भी दी कि महिमा के वे दिन दुःख उठानेवाली उसकी मृत्यु के बाद ही आएँगे। (मत्ती 20:17-19)

इससे बढ़कर यीशु ने यह भी कहा कि उसके शिष्य दुःख उठाने के नम्र जीवन के बाद ही उस महिमा तक पहुंचेंगे। मत्ती 19:30 में यीशु ने कहा :

> परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे। (मत्ती 19:30)

तब उसने मत्ती 20:16 में कहा :

इसी रीति से जो पिछले हैं, वह पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे। (मत्ती 20:16)

फिर उसने इसको मत्ती 20:26-28 में यह कहते हुए इसे दोहराया :

> जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र, इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुडौती के लिये अपने प्राण दे। (मत्ती 20:26-28)

यीशु का राज्य विचित्र लगता था। उसके अनुयायी दुःख उठाएंगे और इस्राएल का राजा स्वंय इस्राएली लोगों के द्वारा मारा जाएगा। विजय से पहले अप्रत्याशित हार होगी।

प्रचंड विरोध का अगला खंड 20:17-34 में यीशु के यरूशलेम की ओर जाने में है। यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह वहां दुःख सहने और मरने जा रहा था। उसे केवल दो चेलों की माता का विरोध सहना पड़ा जो अपने बच्चों के लिए राज्य में अधिकार चाहती थी। तब एक बड़ी भीड़ ने यरूशलेम में यीशु का स्वागत किया जब उसने पुराने नियम की विजय-प्रवेश की भविष्यवाणी को पूरा किया।

अगले भाग, 21:12 – 22:46 में यीशु को विरोध का सामना करना पड़ा जब वह यरूशलेम और मंदिर में आ जा रहा था। उसने लेन देन करने वालों को बाहर निकाला। उसने परमेश्वर के आनेवाले न्याय के संबंध में दृष्टांत कहा। यीशु और धर्मगुरूओं के मध्य कैसर को चुंगी देने, मृतकों का पुनरूत्थान, सबसे बड़ी आज्ञा और मसीह किसका पुत्र है आदि विषयों पर विवाद हुआ।

परंतु यीशु ने अपने विरोधियों का इस तरह से सामना किया जैसा कि हम मत्ती 22:46 में पढ़ते हैं :

> उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका; परन्तु उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ। (मत्ती 22:46)

स्वर्ग के राज्य के प्रचंड विरोध पर आधारित मत्ती के वर्णन का अध्ययन करने के बाद, अब हमें उन उपदेशों की ओर मुड़ना चाहिए जो इसके साथ पाए जाते हैं।

भावी विजय

यह भाग मत्ती 23:1–25:46 में पाया जाता है। इस उपदेश में यीशु ने स्वर्ग के राज्य की भावी विजय का वर्णन किया।

यह भाग मत्ती 23:1-38 में यीशु के विरोधियों के विरूद्ध उसके सात हाय वचनों के साथ आरंभ होता है। यह उपदेश विशेषकर फरीसियों, उनकी झूठी शिक्षा, उनके द्वारा परमेश्वर के लोगों के दुरुपयोग, और उनके पाखंड पर केन्द्रित है।

इस उपदेश के अंत में, यीशु ने मत्ती 23:37-38 में यरूशलेम के विषय में अपनी भावनाएँ को इस प्रकार प्रकट किया :

> हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू जो भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है, कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। (मत्ती 23:37-38)

यीशु के उपदेश के अगले भाग को हम जैतून के पहाड़ के उपदेश से जानते हैं और यह मत्ती 24:1–25:46 में पाया जाता है। इसे प्राय: जैतून पहाड़ के उपदेश से भी जाना जाता है क्योंकि यीशु ने यह उपदेश अपने शिष्यों को जैतून के पहाड़ पर दिया था।

जैतून पहाड़ के उपदेश को हम तीन भागों में बांट सकते हैं : मत्ती 24:4-28 में यीशु ने इस विचित्र युग की उस प्रसव पीड़ा का वर्णन किया है जिसमें स्वर्ग का राज्य इस पृथ्वी पर आया, परंतु यह अपनी पूर्ण महिमा और सामर्थ में अभी तक प्रकट नहीं हुआ है।

मत्ती 24:29-31 में उसने राज्य की पूर्णता के विषय बातें की और उस दिन के बारे में बताया जब मनुष्य का पुत्र बादलों पर आएगा और स्वर्ग का राज्य अपनी पूर्ण महिमा और सामर्थ में प्रकट होगा।

तब 24:32-25:46 में उसने अपने लोगों को उत्साहित किया कि वे उस महिमा के दिन की उत्सुकता से प्रतीक्षा करें क्योंकि कोई नहीं जानता कि वह कब आएगा।

> जब यीशु ने अपने पुनरागमन के बारे में बताया तो वह चाहता था कि हम इस बारे में आवश्यकता से अधिक न सोचें कि वह किस समय आएगा। उसने कहा कि उसके आने की घड़ी व समय के विषय में कोई भी नहीं जानता। यहाँ तक कि इस मानवीय शरीर में होते हुए उसको भी अपने पुनरागमन के समय के बारे में नहीं पता था। इसलिए हमारे लिए भी उस समय को पहचानने का प्रयास करना तथा किसी विशेष समय को निर्धारित करना, उसकी आज्ञाओं की अवमानना करना है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम उस दिन की प्रतीक्षा न करें, आशा न रखें या उसके पुनरागमन के चिह्न न देखें। नये नियम में मसीह के पुरागमन की शिक्षा का उद्देश्य यह है कि वह हमें नम्र रखे, हमें उत्साहित करे, हमें आशा दे, पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित करे और हम मसीह के पुनरागमन की प्रतीक्षा में लगे रहें। और इसलिए यद्यपि हम उस समय को नहीं जानते हैं फिर भी हमें तैयार रहना चाहिए कि वह कभी भी आ सकता है ताकि हम उत्सुकतापूर्वक और आनंद के साथ उससे मिल सकें।
>
> डॉ. के. एरिक थोनेस

> हमें पूर्ण आश्वासन होना चाहिए कि वह वापस आएगा। हमें इस बात का भी पूर्ण आश्वासन होना चाहिए कि वह पुनः आ रहा है और जो कुछ उसने प्रारंभ किया है वह उसे पूरा करेगा। हमें विश्वासयोग्य भी होना चाहिए। हमें ऐसा नहीं होना चाहिए जैसे प्रेरितों के काम 1 में जब यीशु स्वर्ग को उठा लिए गए तो शिष्य स्वर्ग की ओर ताक रहे थे और तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "तुम स्वर्ग की ओर क्या ताक रहे हो? तुम्हें तो सुसमाचार लेकर जगत के छोर तक जाना है।" वह वापस आएगा, लेकिन हमें यीशु के महान आदेश को लोगों तक पहुँचाने में व्यस्त होना चाहिए। हमें अन्यजातियों में इस बात की घोषणा करने के द्वारा कि राजा आ गया है, अपने राजा की सेवा में लगे रहना चाहिए। वह पुनः आ रहा है। पश्चाताप करके सुसमाचार पर विश्वास करो। हमें उनको चेला बनाना है जो राज्य में प्रवेश करते हैं और यीशु पर विश्वास करते हैं, हम उन्हें बढ़ने में सहायता करें ताकि वे परमेश्वर की महिमा के लिए जिएं या उसकी समानता में बदलें। हमें अपने जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर की महिमा के लिए जीना है और उसके आगमन की प्रतीक्षा करते रहना है और कलीसिया के साथ मिलकर यही कहना है, "हे प्रभु यीशु, आ।"
>
> डॉ. स्टीफन वेल्लम

सुसमाचार के इस पाँचवें मुख्य खंड में, मत्ती ने वर्णन किया कि यहूदी अगुवों ने यीशु का तिरस्कार किया और उसे मार डालने की योजना बनाई। परंतु यीशु ने स्पष्ट किया कि इस संसार की सभी योजनाएं भविष्य में राज्य की विजय को नहीं रोक सकतीं। इतिहास इस बात को प्रमाणित करता है कि वह सही था। यहूदी अगुवों ने उसकी हत्या कर दी। परंतु उसका राज्य सभी युगों में बढ़ता चला गया। और एक दिन इतिहास इसके अंतिम भाग को भी सच्चा प्रमाणित करेगा। यीशु बड़ी सामर्थ और महिमा में आएगा ताकि वह अपने राज्य को पूर्णता में स्थापित करे और अपने विश्वासयोग्य लोगों को राज्य की सभी आशीषों से आशीषित करे।

यीशु की सेवा की समाप्ति

मत्ती के सुसमाचार का वर्णनात्मक उपसंहार मत्ती 26:1-28:20 में पाया जाता है। यहाँ मत्ती, मसीहा राजा के रूप में यीशु की गिरफ्तारी, क्रूसीकरण और पुनरूत्थान में उसकी सेवकाई की समाप्ति का वर्णन करता है।

जब हम मत्ती के सुसमाचार के उपसंहार का अध्ययन करते हैं, तो हम उन तीन विषयों पर ध्यान देंगे जो मत्ती के राज्य के महत्व में पाए जाते हैं : विरोध, शिष्यता और विजय। आइए सबसे पहले हम विरोध के विषय की ओर मुड़ें।

संघर्ष

जो राज्य यीशु लेकर आया वह उससे बहुत अलग था जिसकी अपेक्षा यहूदियों ने मसीहा से की थी और इसी बात के कारण वे यीशु और उसके राज्य का विरोध करने लगे। जैसे कि हमने देखा इस विरोध की तीव्रता पूरे मत्ती के सुसमाचार में पाई जाती है, परंतु इसकी समाप्ति उसके वर्णन के उपसंहार में पाई जाती है। उदाहरण के तौर पर, 26:3-4 में हम इसे यहूदियों द्वारा यीशु के विरूद्ध षडयंत्र; 26:14-16, 47, 57-68 में उसकी गिरफ्तारी और मुकद्दमें, और 27:20-25 में उसके क्रूसीकरण के लिए उनके चिल्लाने में पाते हैं। यह तब अपने चरम पर पहुँचता है जब यहूदियों ने यीशु के क्रूसीकरण की जिम्मेदारी स्वयं अपने ऊपर ली। मत्ती 27:25 में मत्ती के विवरण को सुनें :

> सब लोगों ने उत्तर दिया, कि इस का लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो। (मत्ती 27:25)

तब जब यीशु क्रूस पर दुःख उठा रहा था, तो यहूदियों ने उसका ठट्ठा किया, उसके इस्राएल के मसीहा राजा होने के उसके दावे का उपहास किया। जैसे कि हम मत्ती 27:41-42 में पढ़ते हैं :

> इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता। यह तो "इस्राएल का राजा है"। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। (मत्ती 27:41-42)

व्यंग्यात्मक रूप से यहूदियों ने यीशु का विरोध इस आधार पर किया कि वह परमेश्वर के विरुद्ध निंदा करता था और सिंहासन का ढोंगी था, परंतु वास्तविकता तो यह थी कि वे उस राजा का विरोध कर रहे थे जिसके पास उनको उद्धार देने का अधिकार था।

विरोध के विषय के अतिरिक्त, शिष्यता का विषय भी मत्ती के उपसंहार के राज्य के महत्व में प्रमुखता से पाया जाता है।

शिष्यता

मत्ती ने विशेषकर इस बात पर बल दिया कि दुःख उठाने वाले मसीह का अनुकरण करना कितना कठिन है। उसने यीशु की सेवकाई के महत्वपूर्ण समयों में चेलों की असफलता को बताने के द्वारा इस बात पर बल दिया। मत्ती 26:14-16, 47-50 में यहूदा ने उसके साथ विश्वासघात किया, और 27:3-10 में अपनी असफलता के कारण उसने आत्महत्या कर ली। 26:36-46 में पतरस, याकूब और यूहन्ना गतसमनी में उसके साथ जगे रहने में असफल रहे। 26:69-75 में पतरस ने बार-बार इस बात से इनकार किया कि वह उसे जानता है। अन्त में, 26:56 में यीशु के सभी शिष्यों ने उसे छोड़ दिया।

सच्चाई तो यही है कि यीशु का अनुकरण करना बहुत कठिन हो सकता है। हम एक ऐसे मसीहा राजा पर विश्वास करते हैं जिसने दुःख उठाया और हमें भी दुःख उठाने के लिए बुलाया है। यदि हम उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें, तो हमें भी विषम परिस्थिति तथा दुःख का अनुभव करना पड़ सकता है और हमारी ऐसी परीक्षा भी हो सकती है कि विश्वास से भटक जाएं। स्वर्ग का राज्य अपनी पूर्णता में अभी नहीं आया है। और इसी कारण, मसीही जीवन के कई ऐसे पहलू भी हैं जो वैसे नहीं हैं जैसे होने चाहिए।

विरोध तथा शिष्यता के विषय का अध्ययन करने के पश्चात् अब हम अगले विषय स्वर्ग के राज्य की विजय का अध्ययन करने के लिए तैयार हैं।

विजय

विजय का विषय यीशु के पुनरूत्थान में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, जो इस बात का प्रमाण था कि मसीहा राजा ने अपने लोगों के सारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली थी, यहाँ तक की मृत्यु पर भी। हम विजय के विषय को स्वर्गारोहण से पहले यीशु के अंतिम शब्दों में भी पाते हैं। मत्ती के सुसमाचार में पाए जाने वाले यीशु के अंतिम वचनों का मत्ती 28:18-20 में उल्लेख किया गया है, और सामान्यतया उन्हें हम महान आदेश के रूप में जानते हैं। वे अपने शिष्यों को दिए प्रभु के अंतिम निर्देश हैं, जिसमें उसने अपनी अनुपस्थिति में उन्हें सेवा करने की आज्ञा दी। और यह ध्यान देने योग्य बात है कि ये निर्देश मसीह द्वारा साहस के साथ सारे अधिकार का दावा करने के साथ आरंभ होते हैं। मत्ती 28:18 में यीशु की घोषणा को सुनिए :

> यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। (मत्ती 28:18)
>
> केवल यीशु ही वैधानिक रूप से संपूर्ण प्रभुत्व व संपूर्ण सामर्थ का दावा कर सकता है। और ध्यान दें, उसकी सामर्थ विनाशकारी नहीं है क्योंकि यह सामर्थ और प्रेम है। प्रेम से प्रेरित सामर्थ है। प्रेम से संचालित सामर्थ है। इसलिए यदि आपके पास केवल प्रेम ही है, तो आपके पास अच्छा मनोभाव तो है परंतु संभवतः आप असहाय हैं क्योंकि आपके पास किसी भी चीज को बदलने करने की सामर्थ नहीं है। यदि आपके पास केवल सामर्थ है और प्रेम नहीं है तो आप विनाशकारी होंगे, आप हत्या करोगे और घृणा करोगे। यह ईश्वरीय प्रतिभा ही है जो प्रेम तथा सामर्थ को एक साथ लाती है। "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना पुत्र दे दिया।" केवल वही वैधानिक रूप से संपूर्ण सामर्थ का दावा कर सकता है क्योंकि वही अकेला इस धरती पर आया जिसने कभी पाप नहीं किया, कभी झूठ नहीं बोला और कभी किसी को भी धोखा नहीं दिया। केवल वही एकलौता है जो मारे जाने के पश्चात् मृतकों में से जी उठा। इसलिए वह जीवित प्रभु है। यह मानव इतिहास के नए युग का आरंभ है। वह राष्ट्रों में आशा को ला रहा है। इस प्रकार परमेश्वर का राज्य बड़ी सामर्थ के साथ कार्य कर रहा है और इसी पर संसार में सुसमाचार प्रचार और राष्ट्रों को शिष्य बनाने का कार्य

> आधारित है जिसे मैं "महान बुनियाद" कहूँगा। आपके पास बिना महान बुनियाद के महान आदेश नहीं हो सकता है। तब वह इस पर महान प्रतिज्ञा को रख देता है, "मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।" इसलिए यीशु जो प्रभु है, यीशु जो राजा है, वही शासक है जिसके पास संपूर्ण सामर्थ है और इसलिए उसके सामर्थ में हम जाते हैं, शिष्य बनाते हैं, शिक्षा देते हैं और प्रचार करते हैं।
>
> डॉ. पीटर कुजमिक

सारी सामर्थ उस राजा की थी जिसने विजय प्राप्त की। यहूदियों ने उसका तिरस्कार किया; रोमियों ने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया और उन सबने उसका उपहास किया। परंतु क़ब्र उसे रख न सकी, और पुनरूत्थान मसीहा राजा की महान विजय था। उसी के द्वारा ही स्वर्ग का राज्य धरती पर आया। और मत्ती रचित सुसमाचार का शुभ-सन्देश यही है।

यहाँ तक हम मत्ती के सुसमाचार की पृष्ठभूमि, उसकी संरचना तथा उसकी विषयवस्तु का अध्ययन कर चुके हैं, अतः अब हम उन कुछ मुख्य विषयों को देखने के लिए तैयार हैं जिन पर मत्ती ने बल दिया है।

मुख्य विषय

हमारे अध्याय के इस भाग में, हम मत्ती के उन दो महत्वपूर्ण विषयों पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे जिन पर मत्ती ने अपने पूरे सुसमाचार में बल दिया : यीशु के राज्य और सुसमाचार की पुराने नियम की धरोहर, और परमेश्वर के लोग जिनके लिए यीशु राज्य को ला रहा था।

आइये हम यीशु के राज्य और सुसमाचार की पुराने नियम की धरोहर पर मत्ती द्वारा दिए गए महत्व से आरंभ करें।

पुराने नियम की धरोहर

> मत्ती का सुसमाचार वास्तव इस बात का बहुत ही रोमांचक विवरण है कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम ने यीशु मसीह के आगमन की अपेक्षा की थी। यीशु प्रकट होता है और वह देहधारी इस्राएल है। वह मिस्र जाता है। वह मरूस्थल में लेकर जाया जाता है जहाँ उसकी परीक्षा होती है। वह पहाड़ों पर चला जाता है और पुनः लोगों को व्यवस्था (शिक्षा) देता है। नए मूसा या देहधारी इस्राएल की ये सारी तस्वीरें पुराने नियम में अपने स्त्रोत और क्षेत्र में पाती हैं। क्योंकि जब इस्राएल बुलाया गया, जब इस्राएल परमेश्वर के द्वारा चुना गया, उसका चुनाव, केवल आनंद लेने का सौभाग्य ही नहीं था। यह बुलाहट जिम्मेदारी निभाने के लिए थी, उन्हें राष्ट्रों के लिए आशीष बनना था। परन्तु इस्राएल के लंबे और पाप से भरे इतिहास होने के कारण वह न तो कभी अपने लिए आशीष बन पाया और न ही कभी उन राष्ट्रों के लिए जिनके लिए उन्हें बुलाया गया था। अतः यहाँ यीशु परमेश्वर के पुत्र और देहधारी इस्राएल के रूप में है, जो प्रकट होता है और वह उस कार्य को करता है जो इस्राएल न तो कभी अपने लिए कर सका और न ही राष्ट्रों के लिए। और मैं सोचता हूँ कि यह हमें इस बात को और भी गहराई से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> बताता है कि पुराना नियम किस प्रकार यीशु की अपेक्षा कर रहा था, बल्कि इससे कि हम उसे किसी पद में इधर-उधर ढूंढें। यही इस्राएल का संपूर्ण इतिहास है। यही इस्राएल का चुनाव है। यही इस्राएल की असफलता है जिसने यीशु के आने की अपेक्षा की थी और मत्ती इसी को लेता है और पहले पाँच या छः अध्यायों में इसका वर्णन करता है।
>
> डॉ. मार्क गिगनिलियत

सबसे बढ़कर, बाइबल की कहानी उस परमेश्वर के विषय में है जिसने अपने आपको अपने लोगों के साथ प्रेम के न टूटने वाले बंधन से बाँध दिया। यह उसकी विश्वासयोग्यता की कहानी है जिसमें उसने आशीष की अपनी प्रतिज्ञा को लोगों के साथ बनाए रखा। इसीलिए मत्ती ने अपने पीढ़ी के लोगों को बताया कि वे अभी भी पुरानी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा कर सकते हैं और इस पर विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर अभी भी उनके दिनों में यीशु के व्यक्तित्व में कार्य कर रहा है। इसलिए मत्ती बड़े साहस के साथ मसीहा राजा, यीशु मसीह के दावों और सेवकाई का समर्थन करने के लिए पुराने नियम पर निरंतर आश्रित रहा।

हम संक्षिप्त रूप से उन पांच रूपों का सर्वेक्षण करेंगे जिसमें मत्ती यीशु के राज्य और सुसमाचार की पुराने नियम की धरोहर को दर्शाता है : मत्ती के पुराने नियम के उद्धृण और संकेत, स्वर्ग के राज्य पर उसका बल, मसीहा राजा के रूप में उसका विवरण, अविश्वासी यहूदी अगुवों के साथ यीशु का संघर्ष, और यीशु की दीनता और नम्रता। आइए हम मत्ती के पुराने नियमों के उद्धृणों के साथ आरंभ करें।

उद्धृण और संकेत

मत्ती ने दूसरे सुसमाचार लेखकों की अपेक्षा सबसे अधिक पुराने नियम को उद्धृत किया है। मत्ती ने कितनी बार पुराने नियम से उद्धृत किया है इस बात पर विद्वानों के मध्य विवाद है परंतु निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि कम से कम चालीस बार उसने पुराने नियम से उद्धृत किया है और कई और भी संकेत उसने अपने लेख में दिए हैं।

एक वाक्यांश जो मत्ती ने जानबूझ कर बहुधा प्रयोग किया, वह यह है, "जो कहा गया था वह पूरा हो।" मत्ती ने इस वाक्यांश का प्रयोग पुराने नियम और यीशु के जीवन की घटनाओं के मध्य स्पष्ट संबंध स्थापित करने के लिए किया।

उदाहरण के लिए, आइए सुने मत्ती ने मत्ती 8:17 में क्या लिखा :

> ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया। (मत्ती 8:17)

इस पुराने नियम के उद्धृण से तुरंत पहले, मत्ती ने यीशु के चंगाई के कई कार्यों का वर्णन किया था। परंतु वह नहीं चाहता था कि उसके श्रोता उसे केवल एक चंगा करनेवाला ही समझें। बल्कि वह चाहता था कि उसके श्रोता यह जाने कि पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं के आधार पर ही यीशु ने लोगों को चंगा किया।

> मत्ती के दृष्टिकोण से जो महत्वपूर्ण था, और मैं कहूँगा जो हमारे दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण होना चाहिए, वह यह है कि यीशु परमेश्वर के आनेवाले राज्य का प्रकटीकरण है जिसकी लोग लालसा कर रहे थे और प्रतीक्षा कर रहे थे। इसलिए वे मसीहा से यह अपेक्षा नहीं कर रहे थे कि वह ऐतिहासिक रूप से सारी बातों को वैसे ही पूरा करे, बल्कि वे स्वतंत्रता, छुटकारे, पुनर्स्थापना और उद्धार की

> लालसा कर रहे थे। और पुराने नियम ने यह सिखाया कि जब परमेश्वर का राज्य आयेगा तो इसकी घोषणा किसी विशेष व्यक्ति, अर्थात् मसीह के द्वारा की जाएगी, और इस घोषणा के साथ ही परमेश्वर का राज्य आरंभ हो जाएगा और तब सारी पुनर्स्थापना, उद्धार और आशीष जो पुराने नियम में प्रतिज्ञा के आधार पर दिया गया है, पूरा हो जाएगा। इसलिए सामान्य शब्दों में प्रेरित और विषेशकर मत्ती, अपनी गोद में भविष्यवाणी का चार्ट लेकर यह नहीं देख रहे थे कि किसने इस भविष्यवाणी को पूरा किया, परंतु उन्होंने एक व्यक्ति को देखा जिसके कार्य में, शिक्षा देने में, चरित्र में और उसके बारे में सब कुछ, परमेश्वर के राज्य को प्रकट करता है। बल्कि परमेश्वर का राज्य तो मसीह में है, उसने केवल उसकी घोषणा ही नहीं की बल्कि वह उस राज्य को लेकर आया। और उस सामर्थ और शिक्षा और यीशु के कार्य के अनुभव के द्वारा मत्ती सहित सभी प्रेरितों ने इसे पुराने नियम में ढूँढा कि पुराने नियम में यीशु की किस प्रकार प्रतीक्षा हो रही थी। और जब उन्होंने पुराने नियम को यीशु के अनुभव के साथ पढ़ा तो उन्होंने पाया कि पुराना नियम उसकी और विशेषकर उसी की गवाही देता है। तो जब हम पुराना नियम पढ़ते हैं तो जौहरी का चश्मा लगाकर नहीं पढ़ते हैं कि देखें यीशु कहाँ-कहाँ पाया जाता है, परंतु हम इस बात को देखते हुए पढ़ते हैं कि स्वयं मसीह से हमारी भेंट कहाँ होती है, जो सुसमाचार का मुख्य विषय है जब वह गवाह तथा परमेश्वर के राज्य प्रकटीकरण के रूप में आता है।
>
> रेव्ह. माइकल ग्लोडो

दूसरा रूप, जिसमें यीशु की पुराने नियम की धरोहर पर मत्ती के महत्व को देखा जा सकता है, वह है स्वर्ग के राज्य पर उसका बल।

स्वर्ग का राज्य

पुराने नियम में परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी वह अपने लोगों को आशीष देगा और उसकी आशीष एक राजकीय पुत्र दाऊद के द्वारा आएगी। मत्ती ने यह घोषणा की कि यीशु में परमेश्वर के राज्य की आशीष प्राचीन प्रतिज्ञाओं की पूर्णता थी।

मत्ती के सुसमाचार में यीशु स्वंय ही लोगों को इस बात का स्मरण दिलाता है। उसने हमेशा सिखाया कि परमेश्वर अपने पुराने नियम के राज्य की प्रतिज्ञा के प्रति विश्वासयोग्य है। इस प्रकार यीशु अपने राज्य को सुसमाचार के रूप में प्रकट कर सका, यद्यपि इसमें दुःख भी सम्मिलित था और यद्यपि उसने वो सब कुछ नहीं किया जो पुराने नियम के भविष्यवाणी में कहा गया था। यीशु ने इस पर बल दिया कि उसके लोग पुराने नियम के परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखें कि यीशु अंततः उन सभी बातों को पूरा करने के लिए फिर आएगा जो उसने आरंभ की थी, अर्थात् वह उन बातों को पूरा करेगा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी।

वस्तुतः पुराने नियम के स्वर्ग के राज्य के चित्रण पर भरोसा ही वह आधार है जिसके कारण यीशु ने हमेशा शिष्यों को पुराने नियम के प्रति समर्पण करने और विश्वास करने के लिए कहा। इसी आधार पर ही उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में एक दूसरे से प्रेम रखने तथा एक दूसरे की सेवा करने को कहा।

यह ज्ञान कि स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर इतिहास पर नियंत्रण रखता है और अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति वह विश्वासयोग्य है, हर पीढ़ी के लोगों को उत्साहित करना चाहिए है कि मसीह में उसकी प्रतिज्ञाएं अभी भी भली हैं। यह सारी बातें हमें यह विश्वास करने के लिए प्रेरित करें कि एक दिन परमेश्वर सभी चीजें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नई बनाएगा तथा सभी चीजें ठीक करेगा। और वे हमें सामर्थ और धीरज दें जब हम धैर्य के साथ परमेश्वर के राज्य के पूर्णता की प्रतीक्षा करते हैं।

तीसरा रूप, जिसमें यीशु की पुराने नियम की धरोहर पर मत्ती के महत्व को देखा जा सकता है, वह इस बात पर बल देने के द्वारा था की यीशु ही बहुप्रतीक्षित मसीहा राजा था।

मसीहा राजा

इस विचारधारा का उल्लेख हम पहले ही इस अध्याय में कर चुके हैं जब हमने यीशु की वंशावली पर चर्चा की थी। यह इस बात में भी देखा जा सकता है कि मत्ती ने तीनों सुसमाचारों को साथ मिलाकर भी यीशु को "परमेश्वर के पुत्र" के रूप में ज्यादा संबोधित किया है। मत्ती ने यीशु के लिए और भी कई राजकीय शीर्षकों का इस्तेमाल किया, जैसे यहूदियों का राजा, इस्राएल का राजा, तुम्हारा राजा, या केवल राजा। इससे बढ़कर ऐसे कुछ पद जिनमें मत्ती यीशु के लिए राजकीय शीर्षकों का इस्तेमाल करता है वे किसी और सुसमाचार में नहीं पाए जाते।

उदाहण के लिए, मत्ती 2:2 में, मत्ती ने मजूसियों की ओर से इस प्रश्न का वर्णन किया :

> यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? (मत्ती 2:2)

किसी दूसरे सुसमाचार में यह पद नहीं पाया जाता, और न ही यीशु के मसीहारुपी राजत्व पर बल दिया गया है।

यीशु की पुराने नियम की धरोहर पर मत्ती का चौथा महत्व जिसे हम देखेंगे वह है, अविश्वासी यहूदी अगुवों के साथ यीशु का संघर्ष।

अविश्वासी यहूदी अगुवे

मत्ती के आरंभिक श्रोताओं ने संभवतः यह सोचा होगा कि यीशु के इस्राएल के यहूदी अगुवों से संघर्ष के कारण वह मसीहा नहीं था। इसको प्रमाणित करने के लिए कि लोगों के मध्य इस प्रकार का भ्रम न फैले, मत्ती ने स्पष्ट किया कि यहूदी अगुवों के अविश्वासी होने के बावजूद, परमेश्वर यीशु के द्वारा अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा कर रहा था।

यीशु ने बार-बार फरीसियों तथा व्यवस्था के शिक्षकों की शिक्षा को ठुकराया। मत्ती 9:14-17 में उसने उनकी उपवास की विधि, मत्ती 12:1-13 में सब्त, और मत्ती 15:1-20 में हाथ धोने की विधि के दृष्टिकोण को सुधारा। अधिकांश पहाड़ी उपदेश —विशेषकर 5:17-48 —परमेश्वर की व्यवस्था के यहूदियों के दृष्टिकोण से इस बात में विपरीत है कि यीशु व्यवस्था की पूर्णता है।

> कभी-कभी लोगों ने यीशु के इन शब्दों पर आश्चर्य जताया होगा, "तुम सुन चुके हो कि पूर्व काल में लोगों से कहा गया था परंतु मैं तुमसे कहता हूँ . . ." पहाड़ी उपदेश में यीशु उन बातों का खण्डन करता है जो पुराने नियम में कहा गया था। परंतु मैं सोचता हूँ कि स्पष्ट रूप से पढ़ने से पता चलता है कि यीशु पुराने नियम की परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था की उस व्याख्या का खण्डन कर रहा था जो शास्त्रियों और शिक्षकों ने की थी। और यीशु यहाँ पर स्वयं को ऐसे स्थापित कर रहा है जो परमेश्वर की व्यवस्था की सही व्याख्या कर सकता है और परमेश्वर की व्यवस्था में जो लिखा है उसे लेकर अपने उस समयों के श्रोताओं पर लागू कर सकता है।
>
> डॉ. साइमन विबर्ट

जब यीशु पहाड़ी उपदेश में इस वाक्यांश को कहता है, "तुम सुन चुके हो कि पूर्व काल में लोगों से कहा गया था परंतु मैं तुमसे कहता हूँ . . ." वह यह नहीं कह रहा था कि पुराने नियम की व्यवस्था अब रद्द हो चुकी है। वास्तव में, वह स्पष्ट रूप से इसके विपरित बोलता है कि, "मैं व्यवस्था को पूरा करने आया हूँ।" परंतु यहाँ पर जो यीशु कर रहा था वह व्यवस्था को सिखाने की रब्बियों की जानी-पहचानी कला का उपयोग कर रहा था जिसमें व्यवस्था के शिक्षक अपनी शिक्षा देने के अधिकार की बात करते थे। "तुमने अलग अलग लोगों को व्यवस्था सिखाते हुए सुना होगा कि वे व्यवस्था की शिक्षा दे रहे हैं परंतु मैं तुमसे कहता हूँ . . ." और यह वर्तमान अधिकार और एक अतिरिक्त अधिकार के साथ आता है। इस प्रकार यीशु शिक्षा देने की इस कला के साथ अपनी शिक्षा देने के अधिकार को प्रमाणित कर रहा था। पुराने नियम की व्यवस्था को महत्वहीन बनाने के लिए नहीं, परंतु उस बात को कहने के लिए जो धर्मवैज्ञानिक तथा मसीहात्मक सिद्धान्त के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है, वह यह है कि "मेरे संबंध में और व्यवस्था की मेरी शिक्षा के संबंध में पुराने नियम की व्याख्या करना महत्वपूर्ण है।"

डॉ. ग्रेग पेरी

नहीं, यीशु पुराने नियम से विरोधाभास नहीं कर रहा था। परंतु मत्ती के सुसमाचार में हमें एक शीर्षक मिलता है कि यीशु नया मूसा है और वह मूसा से श्रेष्ठ है। इसलिए, हमें पुराने नियम का प्रकाशन मूसा के द्वारा मिला, जो परमेश्वर का आधिकारिक वचन है, परंतु यीशु व्यवस्था का सर्वश्रेष्ठ व्यख्याकार है। पहाड़ी उपदेश में जो हम देखते हैं वह उसका सटीक प्रतिनिधित्व है जो मूसा का अर्थ था। इसलिए यीशु ने इस आज्ञा का खण्डन नहीं किया है, "तू हत्या न करना।" वह हमें स्पष्ट करता है कि हत्या हमारे क्रोध के साथ मन से आरंभ होती है। स्मरण करें कि यह खण्ड कैसे प्रारंभ होता है? यीशु कहता है, "मैं व्यवस्था का खण्डन करने नहीं आया हूँ परंतु इसे पूरा करने आया हूँ," जिसका अर्थ मैं सोचता हूँ कि व्यवस्था का ठीक व्याख्यान करना है। परंतु मैं सोचता हूँ कि यीशु यहाँ यह तर्क दे रहा है कि वह व्यवस्था के उचित अभिप्राय को पूरा कर रहा है। व्यवस्था की व्याख्या यीशु के आगमन, उसकी मृत्यु, और पुनरुत्थान और उसकी सेवकाई के प्रकाश में की जानी चाहिए। परंतु जब हम उसको उस प्रकार से सोचते हैं, तो यीशु पुराने नियम की व्यवस्था का खण्डन नहीं करता बल्कि परिपूर्ण करता है।

डॉ. थॉमस श्रेइनर

यीशु ने वास्तव में पुराने नियम की मसीहा-संबंधी अपेक्षाओं को पूरा किया। परंतु बहुत से यहूदियों ने उसको ठुकरा दिया क्योंकि उनकी अपनी अपेक्षाएं पुराने नियम के अनुसार नहीं थीं, वे पुराने नियम के अनुसार मसीहा के आने की प्रतीक्षा नहीं कर रहे थे। और उनकी नासमझी उन सब के लिए चेतावनी है जो यीशु का अनुसरण करना चाहते हैं। वे हमें चेतावनी देते हैं कि परमेश्वर के कार्यों के विषय में हमारे अपने विचार को दर्शन बना लेना सरल है। वे हमें इस बात की भी चेतावनी देते हैं कि हमें परमेश्वर की सक्षमता के सामने झूठी सीमाएं नहीं लगानी चाहिए, बल्कि उसे हमारी आशाओं और अपेक्षाओं को परिभाषित करने की अनुमति देनी चाहिए।

यीशु की पुराने नियम की धरोहर पर बल देने का पांचवां रूप मत्ती के यीशु की दीनता और नम्रता के वर्णन में स्पष्ट रूप से पाया जाता है।

दीनता और नम्रता

यीशु के समय के यहूदियों ने सही समझा कि पुराने नियम के अनुसार परमेश्वर अपने लोगों को छुडाने के लिए शक्तिशाली योद्धा को भेजेगा। परंतु मत्ती ने इस बात पर बल दिया कि परमेश्वर का महान छुटकारा उसके लोगों के लिए उसकी करुणा में निहित था। इस तथ्य को उसने पुराने नियम से ही प्रमाणित किया।

उदाहरण के लिए, मत्ती 11:29 में, यीशु ने इन शब्दों से बोझ से दबे हुए लोगों को निमंत्रण दिया :

> मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। (मत्ती 11:29)

यहाँ यीशु ने यिर्मयाह 6:16 को यह प्रमाणित करने के लिए उद्धृत किया कि मसीहा अपने लोगों को विश्राम देगा।

इसी प्रकार, मत्ती 12:15-21 में मत्ती ने यीशु की करुणामय चंगाई की सेवा का वर्णन किया, और यीशु के कार्यों को स्पष्ट करने के लिए यशायाह 42:1-4 को उद्धृत किया।

मत्ती 12:19-20 में यीशु के विवरण को सुनिए :

> वह न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा; और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा। वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और धूआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक न्याय को प्रबल न कराए। (मत्ती 12:19-20)

यीशु, सेना के उस कठोर राजा के समान नहीं था जिसकी यहूदी प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह रोम के विरुद्ध युद्ध में उनकी अगुवाई करेगा। इसके विपरित वह तो नम्र और दयालु था।

पुराने नियम के समान, मत्ती ने यीशु का चित्रण विजयी राजा और परमेश्वर के लोगों के आधिकारिक शिक्षक के रूप में किया। इसके साथ-साथ, मत्ती ने इस बात पर बल दिया कि यीशु नम्र तथा दयालु राजा था। हमारे अपने जीवनों और सेवकाइयों में यीशु का अनुसरण करने की बुलाहट हमें वैसी ही करुणा के साथ सत्य को बोलने की चुनौती देती है, जैसा उदाहरण यीशु ने दिया था।

यीशु के राज्य और सुसमाचार की पुराने नियम की धरोहर पर मत्ती ने भिन्न रूपों में बल दिया। इसके साथ-साथ उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यीशु ने उन सारी अपेक्षाओं को पूरा कर दिया जो औसत अपेक्षाओं से ऊपर थीं। परंतु शुभ-सन्देश, अर्थात् सुसमाचार यह था कि को उसने उन्हें पूरा किया। राज्य, व्यवस्था और विशेषकर राजा स्वयं पूरा हो गया जब यीशु स्वर्ग के राज्य को पृथ्वी पर लाया।

अब जबकि हमने यीशु के राज्य की पुराने नियम की धरोहर का अध्ययन कर लिया है, तो आइए अब हम परमेश्वर के लोग के शीर्षक का अध्ययन करें।

परमेश्वर के लोग

सारी बाइबल के समान मत्ती के सुसमाचार में भी परमेश्वर के लोग वे हैं जो उसके अपने हैं और जिन्हें वह अपना निज भाग मानता है, और विशेष राष्ट्र हैं जिस पर वह राजा के रूप में शासन करता है। और वे न केवल परमेश्वर के साथ सीधे संबंध में हैं, बल्कि उन लोगों के साथ भी गहरे संबंध में हैं जो परमेश्वर के लोग हैं।

हम परमेश्वर के लोगों के शीर्षक का तीन भागों में अध्ययन करेंगे। पहला, हम देखेंगे कि मत्ती परमेश्वर के लोगों को कलीसिया के रूप में दर्शाता है। दूसरा, हम यह भी देखेंगे कि वह उन्हें "परमेश्वर का परिवार" भी कहता है। और तीसरा, परमेश्वर के लोगों की उस बुलाहट के बारे में देखेंगे जो उन्हें यीशु से मिली है। आइये सबसे पहले हम इस विचार के साथ आरंभ करें कि कलीसिया परमेश्वर के लोग हैं।

कलीसिया

पुराने नियम में इस्राएल परमेश्वर के लोग थे। परंतु नये नियम में परमेश्वर के लोगों को सामान्यतः "कलीसिया" कहा गया है। "कलीसिया" के लिए हमारा आधुनिक शब्द मत्ती में प्रयुक्त मूल यूनानी शब्द इक्क्लेशिया का अनुवाद है। सेप्टूआजेन्ट, अर्थात् पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में, इक्क्लेशिया, मूल इब्रानी शब्द काहल का यूनानी अनुवाद है, जिसे पुराने नियम में इस्राएल के लोगों की सभा के लिए प्रयोग किया गया है। शब्दावली में परिवर्तन – इस्राएल के लोगों की सभा से मसीही कलीसिया – दर्शाता है कि दोनों यीशु तथा मत्ती ने मसीही कलीसिया को इस्राएल के लोगों की संगति की निरंतरता के रूप में देखा।

पुराने नियम में इब्रानी शब्द काहल या "सभा" के प्रयोग पर ध्यान दीजिए। लैव्यव्यवस्था 16:33; गिनती 16:47; न्यायियों 20:2 और भजन 22:22 में इस्राएल को सभा के रूप में संबोधित किया गया है। वस्तुत: पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों की सभा इतनी महत्वपूर्ण थी कि योएल भविष्यवक्ता ने इस्राएल के लोगों की पहचान के लिए इस शब्द का प्रयोग किया और भविष्यवाणी करके कहा कि अंत के दिन परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना होगी। योएल 2:16 में योएल ने घोषणा की :

> **लोगों को इकट्ठा करो। सभा को पवित्र करो। (योएल 2:16)**

मूल इब्रानी शब्द काहल का अनुवाद "सभा" है। परंतु पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में इक्क्लेशिया शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसे सामान्यतया नये नियम में "कलीसिया" अनुवाद किया गया है।

मत्ती ने भी उसी भाषा का प्रयोग किया जब उसने मत्ती 16:18 में यीशु की ओर से इन बातों का वर्णन किया था।

> **मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा। (मत्ती 16:18)**

यहाँ यीशु के शब्द, मैं अपनी कलीसिया बनाउंगा, में योएल भविष्यवक्ता की भाषा की झलक मिलती है, अर्थात् काहल या अंतिम दिनों की उसकी मसीहारुपी सभा।

> यीशु, मत्ती के सुसमाचार में यह कहता है कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा। मैं सोचता हूँ कि एक अच्छा शुरुआती बिंदु यह याद रखना है कि यूनानी नए नियम में कलीसिया के लिए प्रयुक्त शब्द इक्क्लेशिया वही यूनानी शब्द है जिसे पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों की सभा के विचार काहल को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया गया था, अतः नए नियम की कलीसिया पुराने नियम की सभा, अर्थात् परमेश्वर के लोगों की सभा की निरंतरता है।
>
> **रेव्ह. माइकल ग्लोडो**

हम पहले ही यह देख चुके हैं कि मत्ती 16 की घटनाएँ उस समय घटीं जब मसीहा राजा होने के यीशु के दावे का विरोध हो रहा था। इस विरोध के कारण ही यीशु ने अपने शिष्यों को इस्राएल की सभा के विषय में उत्साहित किया – वह चाहता था कि वे उसकी मसीहा सभा, अर्थात् कलीसिया, को बनाने की उसकी योजना पर भरोसा रखें।

यीशु के शब्दों ने इस बात को भी स्पष्ट कर दिया था कि कलीसिया उसकी थी। यह पतरस की नहीं थी। यह इस्राएल की नहीं थी। यह उसके सदस्यों द्वारा चलाई जाने वाली प्रजातांत्रिक संस्था भी नहीं थी। यह तो मसीह की कलीसिया थी– जिसको मत्ती ने अपने परिचय में स्पष्ट कर दिया था जब उसने युसूफ को दिए स्वर्गदूत के संदेश को बताया था।

मत्ती 1:21 में मत्ती के विवरण को सुनें :

> वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा। (मत्ती 1:21)

यीशु के जन्म से पूर्व ही इस पद में स्वर्गदूत ने युसुफ को आश्वस्त कर दिया था कि मरियम के गर्भ में जो बालक था वह मसीहा था और परमेश्वर के सारे लोग उसके थे। वह उनका राजा था और वे उसके लोग थे।

> अत: अब केवल हम ही यीशु के अनुयायी नहीं है बल्कि हम इस नई सृष्टि की अभिव्यक्ति हैं जिसको यीशु अपनी मृत्यु में से पुनरूत्थान और अपने नए मंदिर के रूप में हमें आत्मा देने के द्वारा लाया है, जिससे हम कलीसिया में परमेश्वर के राज्य की उपस्थिति हैं जहाँ लोगों को दया और क्षमा मिलती है और जब उनको कोई घटी होती है तो उनकी आवश्यकता की पूर्ति होती है और जब वे अपने आपको अकेला पाते हैं तो उनको संगति मिलती है। इसलिए, कलीसिया नई आकाश और नई पृथ्वी का पूर्वानुभव है जो एक दिन सारी सृष्टि में दिखाई देगी।
>
> रेव्ह. माइकल ग्लोडो

जब परमेश्वर के लोग तनावपूर्ण स्थिति में होते है, जब जीवन की परेशानी उन्हें नीचे गिरा देती है, जब उनके चारों ओर फैले अंधेरे का साया उनके ऊपर गिरने लगता है, तो यीशु कहता है, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा। मैं अपनी मसीहा सभा बनाऊँगा।" वह हमें आश्वासन देता है कि वह हमारा राजा है, उसको हमारी चिंता रहती है और वह निश्चय हमें छुड़ाएगा और अंत में हमें आशीष देगा। यह शायद इस जीवन में नहीं होगा। परंतु यह होगा। इसके प्रति हम आश्वस्त हो सकते हैं।

परमेश्वर के लोगों का वर्णन कलीसिया के रूप में करने के बाद, मत्ती ने उन्हें परमेश्वर के परिवार के रूप में भी पहचाना।

परमेश्वर का परिवार

मत्ती रचित सुसमाचार में "पिता," "पुत्र," और "भाई" जैसे सामान्य शब्दों का प्रयोग 150 से भी अधिक बार किया गया है जो परमेश्वर के उनके साथ संबंध और उनके आपस में संबंध को दर्शाता है। पारिवारिक शब्दों का इस्तेमाल करनेवाला अन्य सुसमाचार लेखक यूहन्ना था। परंतु जब यूहन्ना ने इनका प्रयोग किया तो उसने यीशु और उसके स्वर्गीय पिता के संबंध के संदर्भ किया।

इसके विपरीत, जब मत्ती इसका प्रयोग किया तो वह परमेश्वर और उसके लोगों के बारे में बात कर रहा था– वह परमेश्वर के परिवार के विषय में बात कर रहा था। और मुख्यत:, मत्ती ने इस शब्दावली का प्रयोग उस देखभाल और सुरक्षा पर बल देने के लिया जो परमेश्वर अपनी संतान को प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए, मत्ती 6:4 में यीशु ने अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की देखभाल को इन शब्दों में प्रकट किया :

> तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। (मत्ती 6:4)

और उसने इसी भाषा का प्रयोग पुनः पद 6 में और फिर पद 18 में किया। उसका मूल सारांश यह था कि परमेश्वर अपने लोगों की देखभाल करता है और उनको उत्साहित करता है और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

और जब यीशु ने अपने शिष्यों को यह बताया कि उन्हें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए तो उसने उन्हें मत्ती 6:8 में यह कहते हुए अपने निर्देशों का परिचय दिया :

> तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यकता है। (मत्ती 6:8)

हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर हमें आशीष देगा और वह हमारी प्रार्थनाएँ सुनेगा, क्योंकि हम जानते हैं कि वह हमारा प्रेमी पिता है।

> मेरे शिक्षण का क्षेत्र आत्मिक जीवन का निर्माण है और प्रभु की प्रार्थना के विषय में एक बात जो मैं कहता हूँ, वह यह है कि हम इस बात को जानकर प्रार्थना करें कि अन्य असंख्य लोग भी उसी समय प्रार्थना कर रहे होंगे। एक कारण है जिसके लिए हम परमेश्वर को "परमेश्वर" करके संबोधित करते हैं कि परमेश्वर उनमें से हरेक प्रार्थना को एक-एक करके सुन सकता है, जैसे कि एक ही जन उस समय उसके ध्यान को आकर्षित कर रहा हो। वह हमें एक पवित्र संगति में लाता है, स्वर्ग के राज्य के एक व्यक्तित्व के रूप में। और उसके पश्चात्, पिता शब्द आता है। इसके बाद चाहे मैं कोई भी क्यों न हूँ या फिर उस प्रार्थना में कहीं पर भी क्यों न हूँ, मैं परमेश्वर के समीप अब्बा, पिता करके जाता हूँ। और यदि पोलैंड का एक व्यक्ति परमेश्वर को "पिता" करके संबोधित करता है, और मैं भी परमेश्वर को संयुक्त राज्य में "पिता" करके संबोधित करता हूँ, तो इसका यह तात्पर्य हुआ कि हम सब भाई-बहन हैं। यदि हमारा एक ही पिता है, तो हम एक ही परिवार के सदस्य हैं। इसलिए मैं सोचता हूँ कि मत्ती इस विषय पर परमेश्वर के राज्य के सामर्थशाली विचार का अनुमोदन करता है, जिसका वह बार-बार प्रयोग करता है। परंतु यह तो प्रार्थना का जीवन है जो हमें इस बात की प्रतीति कराता है कि जब मैं प्रार्थना करता हूँ तो मैं दूसरे लोगों के साथ प्रार्थना करता हूँ जो एक ही बात कहते हैं, परंतु जब वे भी वही बात बोलते हैं जो मैं बोलता हूँ तो इसका तात्पर्य यह है कि हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं।
>
> डॉ. स्टीव हार्पर

> हमें परमेश्वर के राज्य में गोद लिया गया है, इससे बढ़कर और अधिक हमें उत्साहित करने वाली कोई बात नहीं हो सकती। पापों की क्षमा प्राप्त करना एक बहुत बड़ी बात है, परंतु जैसे जे. आई. पैकर अपनी पुस्तक परमेश्वर को जानना में कहता है, परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराया जाना भी एक बहुत बड़ी बात है, परंतु परमेश्वर के परिवार में गोद लिया जाना इससे भी बड़ी बात है। परमेश्वर को अपने पिता के रूप में पाना वास्तव में हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य की चरम सीमा है। न्यायी के द्वारा न केवल हमें क्षमा किया जाता है बल्कि हमें परमेश्वर के घराने में स्वीकार किया जाता है, वह हमारा पिता है और हम उसके बच्चे हैं। और इसलिए हम मसीह के साथ सह-उत्तराधिकारी हैं। जो कुछ यीशु का है, अर्थात् सब कुछ, वह सब हमारा है। वही हमारा उत्तराधिकार है। एक समय था जब हम क्रोध की संतान थे, जब हमारा उत्तराधिकार परमेश्वर का क्रोध था। परंतु अब क्रोध की अपेक्षा हम मसीह के साथ सह-उत्तराधिकारी हैं। हम ईश्वरीय प्रकृति के भागी हैं और सचमुच हमें मसीह के साथ भाई कहा जाता है क्योंकि उसके साथ हमें पुत्रत्व का दर्जा मिला है। हमने अपनी अधार्मिकता का सौदा मसीह की धार्मिकता के साथ किया है। इसके द्वारा हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, और उसके परिवार में निमंत्रण पाते हैं। और हमारे लिए यह सबसे बड़ी आशीष है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

डॉ. के. एरिक थोनेस

मत्ती 6:25-34 में यीशु ने परमेश्वर की संतान को उसकी देखभाल के प्रति आश्वस्त करने के लिए "आकाश के पक्षी" और "मैदान के फूल" के दो उदाहरण दिए, और इससे यह दर्शाया कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के सबसे छोटे प्राणी की देखभाल भी करता है। और उसका कहना यह था कि यदि परमेश्वर छोटी से छोटी बात का ध्यान रखता है, तो निश्चय ही वह अपने लोगों की बहुत अधिक देखभाल करेगा। हमारा स्वर्गीय पिता हमें उत्तम भोजन, वस्त्र और सुरक्षा प्रदान करेगा।

यीशु जब अपने शिष्यों को सेवकाई की बड़ी मुश्किलों की चेतावनी दे रहा था, तो उसने परमेश्वर की पितारुपी देखभाल और सुरक्षा पर बल दिया। उदाहरण के लिए, मत्ती 10:19-20 में, यीशु ने उन्हें बताया कि वे बंदीगृह में डाले जाएँगे। परंतु उसने उन्हें यह भी आश्वासन दिया कि पिता का आत्मा उनके साथ होगा। और उसने उन्हें यह भी स्मरण दिलाया कि जब उनका जीवन उनकी सेवकाई के कारण खतरों में होगा तो उनका पिता उनकी सुरक्षा करेगा।

मत्ती 10:29-31 में यीशु के उत्साहित करने वाले शब्दों को सुनिए :

> क्या पैसे मे दो गोरैये नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। इसलिये, डरो नहीं; तुम बहुत गोरैयों से बढ़कर हो। (मत्ती 10:29-31)

> बहुत से विश्वासियों के लिए मसीही होने का जीवन अति कठिन है। संसार के बहुत से हिस्सों में मसीहियों को सताव का सामना करना पड़ रहा है। और उनके जीवन का महान आनन्द यह है कि वे उसी देह के अंग हैं और वे अपनी पहचान परमेश्वर के लोगों के रूप में कर सकते हैं। पवित्रशास्त्र हमें यह बताता है कि परमेश्वर हमारा पिता है। हमारे पास बहुत बड़ा सौभाग्य है, जैसे कि रोमियो 8 हमें बताता है कि हम परमेश्वर को अब्बा कह सकते हैं। हमें यह भी आश्वासन है कि परमेश्वर लगातार हमारी देखभाल करता है। और हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर अपने परिवार के लोगों से प्रेम भी करता है। और इस प्रकार, विश्वासी के लिए उसके जीवन का ह्रदय यह प्रेरणा है जो मसीह से आती है क्योंकि परमेश्वर अब हमारा पिता है।

डॉ. जेफ लोमैन

परमेश्वर के लोगों के विषय में एक कलीसिया तथा परमेश्वर के परिवार के रूप में अध्ययन कर लेने के बाद, अब हम परमेश्वर के लोगों की बुलाहट के विषय में अध्ययन करने के लिए तैयार हैं।

बुलाहट

परमेश्वर के लोगों का यह सौभाग्य है कि वे उसकी कलीसिया तथा उसके परिवार के भाग हैं। परंतु उसके लोगों के रूप में हमारी बुलाहट में कठिनाईयाँ, खतरे और दु:ख भी शामिल है। यीशु स्वंय ही हमारा दु:ख उठानेवाला मसीहा राजा है। और जब हम उसका अनुकरण करते हैं तो हम दु:ख भी उठाते हैं।

उदाहरण के लिए, मत्ती 10:34-36 में यीशु ने स्पष्ट किया कि हमारी बुलाहट में संघर्ष है। सुनिए उसने वहां क्या कहा :

> यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ। मैं तो आया हूँ, कि मनुष्य को उसके पिता से,

> और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे। (मत्ती 10:34-36)

और मत्ती 16:24-25 में वह इस प्रकार कहता है :

> तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। (मत्ती 16:24-25)

यीशु जानता था कि उसके लोगों को भी वैसे ही ठुकराया जाएगा, जैसे वह ठुकराया गया था। क्योंकि हमारे राजा के लिए दु:ख उठाना ही महिमा का मार्ग था। और यही हमारे लिए सही है।

> क्रूस पर लोगों ने सोचा होगा कि वह युद्ध हार रहा है और कब्र में उन्होंने सोचा कि वह समाप्त हो चुका है, परंतु वे तीसरे दिन की सुबह भूल गए। यीशु ने कहा, "तुम इस शरीर को फाड़ डालो, मैं तीन दिन में फिर जी उठूँगा।" और जब हम कलीसिया के विषय में सोचते हैं कि वह किस तरह ठुकराई गई, कैसे उसकी आलोचना हुई और हर क्षेत्र में उसे बदनाम किया गया, तो हम समझते हैं कि वही कलीसिया जिसे यीशु ने कार्य के लिए स्थापित किया आज कार्यरत है। देखिए कि इस कलीसिया ने क्या कुछ सहा और यह कैसी विपत्तियों में से होकर गुजरी, फिर भी अभी तक यह स्थिर है। मैं थोड़ा और आगे बढ़ता हूँ। यीशु मसीह का सुसमाचार, अर्थात् वह वचन जो देहधारी हुआ, वे तब उसको नहीं मार सके, अब भी वे उसे नहीं मार सकते। अत: हम उसके . . . भाग हैं, हम वह कलीसिया हैं, जो उसकी कलीसिया है, और वह किसी को भी अनुमति नहीं देगा, नरक के फाटकों को भी कि वे उस पर प्रबल हों। उसके मिशन को कोई नहीं रोक सकता है। इस कलीसिया के पास एक मिशन है और इसे लोगों को कलीसिया में लाने के लिए सारे जगत में जाना है और खोए हुओं को शिष्य बनाना है। और यह जानते हुए कि कलीसिया हमेशा बनी रहेगी, यह कितना बड़ा आनन्द है कि आपको और मुझे एक बड़ी सुरक्षा मिली है और हम वास्तव में अभी पुनरुत्थान के क्षण को प्राप्त कर सकते हैं।
>
> डॉ. विल्ली वेल्स

यीशु प्रतिज्ञा करता है कि वह अपने लोगों के दु:खों का अंत करेगा, हमें कठिनाइयों से विश्राम देगा, हमारे लिए शांति स्थापित करेगा, और हमें बहुतायत से आशीष देगा- परन्तु अभी नहीं। जब तक वह सब नया करने के लिए लौट नहीं आता, हमारी बुलाहट हमारे दु:ख उठानेवाले राजा का अनुसरण करना है।

> यीशु ने हमें बताया कि वह हमें जीवन देने आया है और बहुतायत का जीवन देने आया है। परंतु इस जीवन में यीशु को जानने के बाद भी हम दु:ख, दर्द, बीमारी का अनुभव करते हैं; और अभी भी मरते हैं। हमें अभी भी निराशा का अनुभव होता है और हमारी कई महत्वकांक्षाएँ भी होती हैं। हम अभी भी चिडचिडाहट का अनुभव करते हैं, और उसी के कारण दु:ख उठाते हैं। आप जानते हैं जो बातें हमें यहाँ पहचानने की आवश्यकता है वह यह है कि उस बहुतायत की ज़िन्दगी प्राप्त करने के मध्य मसीह का होना अवश्य है। यदि हमें निराशा तथा चिड़चिडेपन का

अनुभव न हुआ हो तो हम अपने मसीही जीवन की बातों को कभी नहीं जान पाएंगे। यदि हमने दु:खों का अनुभव नहीं किया है तो हम कभी भी आनन्द का मज़ा नहीं ले पाएंगे। मैं सोचता हूँ यहाँ इससे भी बढ़कर है। यीशु ने कहा, "मैं इसलिए आया हूँ ताकि तुम जीवन पाओ और तुम उसे बहुतायत से पाओ।" परंतु आपको मालूम है कि हम किसी बात की लालसा कर रहे हैं। मसीह में पाए जाने का एक हिस्सा यह है कि उस भरपूरी की लालसा रखें जो वह हमें देने पर है। एक दिन आने वाला है जब मसीह अपनी कलीसिया के लिए आएगा। एक दिन आनेवाला है जब वह सबके देखते-देखते राज्य करेगा। एक दिन आनेवाला है जब सारे घुटने उसके सामने झुकेंगे और हर एक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है। एक दिन आनेवाला है जब सबकी आँख सूखी होगी सबके आँसू पोंछे जाएंगे। और इस समय मसीह में बहुतायत के जीवन का तात्पर्य है, मसीह में विश्राम करना, अर्थात् उस सारे आनन्द और पीड़ा का अनुभव करना जो इस जीवन और पतित संसार में आते हैं, जब हम उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं जो आनेवाला है। बहुतायत के जीवन का अर्थ है, मसीह पर उस समय तक भरोसा करना जब तक वह आ नहीं जाता।

डॉ. आर. अलबर्ट मोहलर, जूनियर

उपसंहार

मत्ती रचित सुसमाचार के इस अध्ययन में, हमने इसकी पृष्ठभूमि, इसके लेखक, मूल श्रोता और इस सुसमाचार के लिखे जाने के अवसर को देखा है; हमने इसकी संरचना और विषय-वस्तु का भी अध्ययन किया है, और हमने इसकी धरोहर के पुराने नियम के मुख्य विषयों और परमेश्वर के लोगों पर इसके महत्व को देखा है।

मत्ती का सुसमाचार इस शुभ-सन्देश की घोषणा करता है कि पुराने नियम की स्वर्ग के राज्य की प्रतिज्ञाएँ, मसीहा राजा यीशु के व्यक्तित्व तथा कार्य में पूरी हो गई हैं। और शुभ-सन्देश यह है कि यीशु ने हमारे लिए और हमारे माध्यम से अपने राज्य की स्थापना की है, और उसे निरंतर बनाता जा रहा है। परंतु यह सुसमाचार हमेशा इतना सरल नहीं है। जैसा हमने देखा, मत्ती ने हमारी बुलाहट को दु:ख उठाने वाले मसीहा राजा का किसी भी परिस्थिति में अनुकरण करने के रूप में दर्शाया है। परंतु इसके साथ ही उसने स्वर्गीय पिता की आशीषों का भी हर परिस्थिति में वर्णन किया है, अर्थात् वे आशीषें जो स्वर्ग के राज्य का इस पृथ्वी पर अपनी संपूर्ण महिमा में आने के समय तक राजा का विश्वासयोग्यता से अनुकरण करने और हमारे अपने दु:खों में धैर्य के साथ आगे बढ़ने में हमें योग्य बनाती हैं।